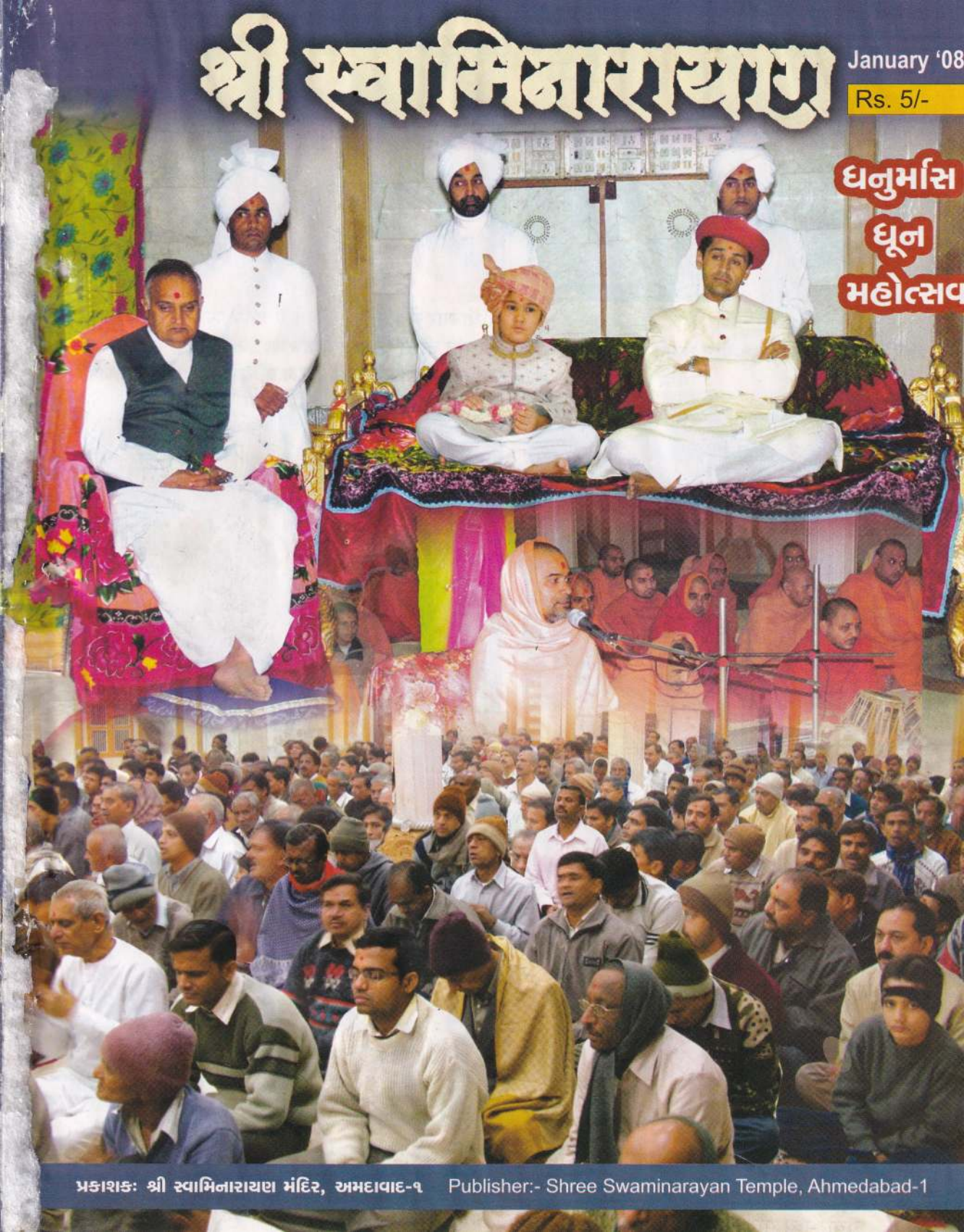
શ્રી સ્વામિનારાયણ

January '08
Rs. 5/-

ધનુર્માસિ ધૂન મહોત્સવ



પ્રકાશકઃ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



सीडनी मंदिर में कथामृत पान कराते हुए हरिभक्त ।



गांधीनगर सेक्टर-२३ अपने मंदिर में शा.स्वा. हरिकेशवदासजी की संत दीक्षा के ५० वें वर्ष के उपलक्ष्य में स्नेहगीता पुस्तिका का विमोचन करते हुए प.पू. बड़े आचार्य महाराजश्री ।



जेतलपुर मंदिर में विराजमान घनश्याम महाराज तथा धनुर्मास प्रसंग पर धुन ।



बद्रीनाथ मंदिर में पाकट्योत्सव प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन ।





नवरंगपुरा (ता. पाटडी) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर सभा में पू. पी.पी. स्वामी को प्रसन्नता का हार पहनाते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे
तंत्रीश्री
स.गु. स्वामी नारायणस्वरूपदासजी
(महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फेक्स : २२१७६९९२.
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - 1 अंक : 9 जनवरी -2008

अनुक्रमणिका

१. अस्मदीयम २
२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा ३
३. हे युवानो !! ४
४. क्रोध ५
५. वचनामृत-कारीयाणी ७
६. ओकलेन्ड श्री स्वामिनारायण मंदिर ९
७. सत्संग सुरभि ११
"हम तो जीव के अपराध क्षमा करने बैठे हैं"
८. सत्संग बालवाटिका १३
(१) अक्षरदालान की वात
(२) मौन रहने से भजन बढती है
९. भक्तिसुधा १५
(१) घनश्याम बहुत चमत्कारी है।
(२) हमारे सरोवर की महिमा
(३) माया का त्याग
१०. प्रश्नपेटी १७
११. समाचार वृत्तांत १८

: संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक :
महंत स्वामी नारायणस्वरूपदासजी द्वारा
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए
श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१
से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

अस्मदीयम्



तन्त्रीश्री की तरफ से.....

"धुनि थाय चौदलोक न्यारी" इस कीर्तन के पद को सार्थक करने वाली पवित्र धनुर्मास के धुनि की ज्योति श्री नरनारायणदेव के पुनीत सानिध्य से देश-विदेश के प्रत्येक शिखरी मंदिरो, हरि मंदिरो, में ढोल-मृदंग-मजीरा, तबला इत्यादि के ताल के साथ उच्च स्वर में "स्वामिनारायण" महामंत्र की प्रातः धुनि की गगनभेदी आवाज अष्ट आवरण को भेदकर भगवान की मूर्ति की अपने आप स्मृति बनी रहे ऐसा वातावरण बना रहता है, इसी में भगवान की कृपा वरसती हैं। श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा बहनो की सभा में प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी एवं प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री उषःकाल में ५-३० बजे मंगला आरती में पधारकर कथा एवं धुनि में अखंड विराजमान होकर भक्तों की भक्ति में नव चेतना भर देती हैं। उत्तम वातावरण में कनिष्ठ जैसे पामर सत्संगी भी प्रातःकाल धुनि में चूकते नहीं है। कितने तो अचूक हाजिर होते हैं।

श्रीहरिने स.गु. व्यापकानंद स्वामी को भूमापुरुष के लोक में सत्संग कराने के लिए भेंजा। बीच में अनेक प्रकार के विघ्नों का आवरण आया, उस समय स्वामीने मंत्र, शास्त्र, गीता, भागवत इत्यादि के पठन से कितने आवरणों को पार कर गये। लेकिन उत्तरोत्तर आवरण बढते जाने से स्वामी वापस आ गये। यहाँ आकर स्वामीने घटनाओं की वात की। श्रीहरि ने कहा कि अब आपको जब कोई राक्षस या आवरण दिखाई दे तो "स्वामिनारायण" मंत्र का उच्चस्वर से पाठ करना। आपके सभी आवरण नष्ट हो जायेंगे। श्रीजी महाराज की आज्ञा से व्यापकानंद स्वामी पुनः भूमा पुरुष के लोक में जाने लगे तो बीच में जब विघ्न आते तो "स्वामिनारायण" महामंत्र का गान करते, जिससे सभी आवरण नष्ट हो जाते थे। मलिन तत्व, विघ्न दूर हो गये तथा सरलता से भूमापुरुष के लोक में पहुँच गये। वहाँ स्वामिनारायण भगवान से वंचित मुक्तों को स्वामिनारायण भगवान की महिमा बताये। जिसमें से कितने मुक्त धाम छोड़कर सत्संग में जन्म लिये। श्री स्वामिनारायण भगवान की मूर्ति का ध्यान करके धुनि बोली जाय तो भगवान की मूर्ति का दिव्य अलौकिक स्वाद आने लगता है। परिणाम स्वरुप आवरण सभी नष्ट हो जाते हैं। मात्र "स्वामिनारायण" महामंत्र में ही अष्ट आवरणों को भेदन करने की शक्ति है। जिसे सभी सत्संगी को जानना चाहिए। मूर्ति का ध्यान किये विना धुनि करने का कोई मतलब नहीं है। ध्यान के विना कीर्तन गाये न गाये के बराबर है। मूर्ति का जो ध्यान करके गान करते हैं उनके जन्म जन्मांतर तक की थाक उतरजाती है। जीवन धन्य हो जाता है।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

- साधु नारायणस्वरुपदास का

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रूपरेखा

दिसम्बर-२००७

१. श्री अशोकभाई हरिकृष्णभाई ठक्कर के यहाँ पदार्पण आनंदनगर ।

२. टाटा नगर सोसायटी मेघाणीगनर पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

३. नवरंगपुरा (ता. विरमगाँव) नूतन मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री महेन्द्रसिंह खुमानसिंह झाला के यहाँ पदार्पण, घोड़ासर ।

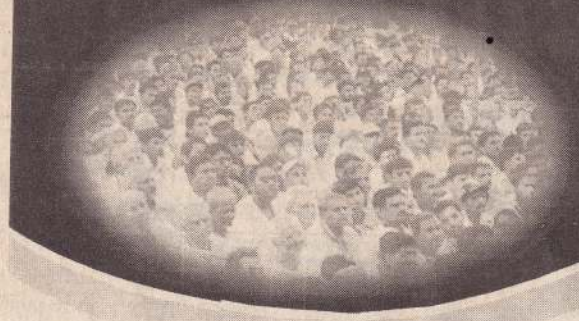
४. श्री विन्देश जगदीशभाई पटेल के यहाँ पदार्पण गांधीनगर ।
श्री जगदीशभाई चिमनभाई पटेल के यहाँ पदार्पण गांधीनगर ।
श्री चंदूभाई चूडासमा के यहाँ पदार्पण - सेटेलाईट ।
श्री जयंतीभाई के यहाँ पदार्पण आकाश पार्टी प्लोट ।

५. दिसम्बर से २९ दिसम्बर
केनेडा टोरन्टो में श्री नरनारायणदेव देश विभाग के अन्तर्गत आई.एस.एस.ओ. संस्थापित नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर के खात मूहुर्त प्रसंग पर तथा अमेरिका में आई.एस.एस.ओ. चेप्टर में धर्मप्रचारार्थ पदार्पण ।

२९. कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर धनुर्मास धून प्रसंगे पदार्पण ।

३०. उनावा श्री स्वामिनारायण मंदिर शाकोत्सव प्रसंगे पदार्पण ।
एवं मोटेरा श्री स्वामिनारायण मंदिर पारायण प्रसंगे पदार्पण ।

बाद में श्रीजी महाराज ने कहा कि हम तो श्री नरनारायणदेव के दास है । श्री नरनारायणदेव महाप्रभु को जो अच्छा लगे वही करना श्रेयस्कर है । श्री नरनारायणदेव की इच्छा होगी तो सत्संग में वृद्धि होगी, यदि उनकी इच्छा नहीं होगी तो वृद्धि नहीं होगी । नरनारायणदेव महाप्रभु की इच्छा हो तो हाथी पर बैठ कर प्रसन्न रहना । यदि गधे पर बैठायें तो गधे पर बैठकर प्रसन्न रहना । महाप्रभु नरनारायणदेव के चरणारविंद के सिवाय कहीं प्रीति नहीं रखना ।



हे युवानो !!

- कोठारी स्वामी रामानुजदासजी

हे युवानो ! ..... युवानी तो जीवन की वसंतऋतु है। युवानी की शोभा उत्तम संस्कार, सच्चा शिक्षण, विवेकपूर्वक ज्ञान, विनय-सत्संग उत्तमचरित्र, उत्तम वांचन उससे भी अधिक वर्तन-वाणी तथा अच्छे विचारों से होती है। सभी ऋतुओं की शोभा जैसे वसंत ऋतु है इसी तरह युवानी भी जीवन की वसंत ऋतु है। वसंत को कलुषित करके दम घोंटडाले तो कुदरत की कला से खिली हुइ कोपलें मुरझा जायेंगी इसका सदा ध्यान रखना चाहिये।

वसंत से पूर्व पतझड़ की ऋतु में पत्ते न गिरें तो नये पत्तो के अभाव में वसंत खिली हुई कैसे कहलायेगी ?

इसी तरह युवानी में भी आदर्श विचार न आया, सात्विक एवं शुद्ध आहार की चाहना न रही, खराब वांचन, खराब वाणी - खराब दृश्य - खराब वर्तन से दूर न रहे तो युवानी जाने वाली ही है। पुनः वापस आयेगी क्या ? तो हे युवानो जीवन की इस महान संपत्ति को वचा लेने में ही जीवन की सार्थकता है।

युवानी स्री वसंत को यदि संस्कारों के श्रृंगार से संस्कृत करके खिलाना चाहते हैं तो श्रीजी महाराज एवं बड़े संतो की आज्ञा में रहकर सत्पुरुषों का नित्य सत्संग करके कुसंग से दूर रहना पड़ेगा। कारण यह कि आधुनिकता के नाम पर जगत में झंझावती कुत्सित विचार मनुष्य के मानस को परिवर्तन कर दिया है। शास्त्र एवं संतो के मुख से ऐसा सुना गया है कि विषय एवं व्यसन स्री झंझावत स्री दावानल जीवन को बरबाद करने में पूर्ण समर्थ है। व्यसन एवं फैसन का अंधानुकरण युवानों को पागल बना दिया है।

युवानों के मानस को परिवर्तित करके गलत मार्ग पर लेजाने में मुख्य कारण मद्यपान, अहंकार, अंधश्रद्धा, जूआ, खराब वांचन, खराब शिक्षण, अखाद्य आहार, नकल इत्यादि .... जीवन में चाहे जितनी संपत्ति मिली हो, परंतु शरीर संपत्ति कंगाल हो तो सब कुछ किस काम का !! तामसी आहार, विहार, मद्यपान अर्थात् शरीरको पायमाल बनाने का निमंत्रण।

गुणातीतानंद स्वमीने कहा है कि "विषय वस्तु अने वहम प्रभु भजवा दे केम।" श्रीजी महाराज ने आज्ञा की है कि "मादक द्रव्य का कभी उपयोग नहीं करना चाहिए।" व्यसन से दूर अर्थात् सत्संग की तरफ गति करना, सत्संग से अधिक और कोई प्रिय हो सकता है क्या ?

युवा मित्रो ! जीवन में आहार-विहार का बड़ी महत्व है। सभी जानते है कि "जैसा खाये अन्न वैसा बने मन। अन्न के ऊपर विचार निर्भर है। विचारों की असर व्यवहार में परिणित होती है। स्वंय भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में सात्विक, राजसिक, तामसिक आहार की चर्चा किया है। तामसी-आहार लेने से क्रोध, मोह, ईर्ष्या इत्यादि दुर्गुणो का जन्म होता है - इसी में से संमोह - स्मृति भ्रंस तथा बुद्धि का नाश होता है - जिस में से सर्वनाश हो जाता है। भीष्मपितामह के दृष्टांत से स्पष्ट हो जाता है। आहार का प्रभाव कितना है ? प्रभु को अर्पण करके आहार लिया जाय तो सतोगुण की वृद्धि होती है। शुद्ध विचार आते है। श्रीजी महाराज ने वनचामृत में कहा है कि पांच इन्द्रियों का आहार अति शुद्ध रखोगे तो अंतःकरण शुद्ध होगा और अंतःकरण शुद्ध होते ही भगवान की अखंड स्मृति बनी रहेगी।

इसलिये हे युवानो ! आपकी युवानी तो भगवान की प्राप्ति के लिए है। कुटुम्ब तथा समाज का कार्य करते हुए सत्संग की प्रगति के साथ प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त करने का समय ही युवानी है।

सात्विक वांचन, उत्तम मित्र-सत्संग, आचार्य महाराजश्री संत एवं बड़े हरिभक्तों का उपदेश अपने जीवन में उतारे तो जीवन सुगन्धमय बन जायेगा।

सर्वोपरि के उपासक ऐसे धर्मप्रेमी एवं सात्विक माँ-बाप की संतान हो तो माँ-बाप को वंदन करना तथा मंदिर जाने के लिए सिखाना नहीं पड़ता है। यह जन्मजात् संस्कार होता है। सत्संग में कुछ करदिखाने की तमन्ना, देव मंदिर, आचार्य-संत एवं सत्संग के लिए

अनुसंधान पृष्ठ नंबर ८



- साधु धर्मकिशोरदास (प्रयागराज यु.पी.)

''ज्यारे व्यापे क्रोध, अमृत विष करी जाणे
ज्यारे व्यापे क्रोध, बोध कोईनो नवमाने,
ज्यारे व्यापे क्रोध, सगाने शत्रु जागे ।''

क्रोधी व्यक्ति जले हुए काष्ट के भांति निरंतर जलता ही रहता है, क्रोध बहुत ही खतरनाक होता है । क्रोधपूर्ण व्यक्ति को विवेक-आचरण का ज्ञान नहीं होता । किस व्यक्ति के सामने क्या बोलना है उसका ज्ञान भी नहीं रहता । क्रोध के अंदर व्यक्ति अंधा हो जाता है । क्या सही है क्या गलत है ? क्या करना है क्या नहीं करना उसका भी ज्ञान नहीं होता । क्रोध ऐसी तपनी है जो मनुष्य को अंदर से जला देती है । साथ में उसकी चिंगारी भी बाहर आती है । क्योंकि क्रोध के आग की ज्वाला कब बाहर आ जाये ये पता नहीं होता । जब आप किसी व्यक्ति के साथ झगड़ा करते हो तो वह व्यक्ति अपना गुस्सा किसी और पर नीकाल दे तो वह व्यक्ति खतरनाक नहीं होता । परंतु अगर कोई व्यक्ति सब कुछ सुनकर मन में दबाकर रखता है तो उसके मन में निरंतर यही बात चलती है कि कब ये व्यक्ति मेरे हाथ में आये और मैं उस पर प्राणघाती हमला कर दू जगतमें ऐसे बहुत ही द्रष्टांत हैं । रोज-रोज (Neas Pepar) में मसाचार आते रहते हैं । क्रोध के वश में आकर व्यक्ति न करनेवाला कृत्य भी कर देता है । उसके बाद उसे पश्चाताप भी होता है । एक सिनेमाघर के अंदर पति-पत्नी दोनो अपने छोटे बच्चे को लेकर फिल्म देखने गये । फिल्म चालु हो गयी। फिल्म के अंदर भयानक दृश्य के साथ आवाज आ रही थी तो छोटा बच्चा मा की गोद के अंदर रोने लगा । उसी समय पब्लिक में से आवाज आयी, अरे ! यह बच्चा किसका है, चुप करो ।

तब पति ने पत्नी को कहा मीन्टु को चुप करवा । पत्नीने कहा चुप तो करवा रही हुं लेकिन चुप ही नही हो रहा । बच्चा अभी रो रहा था । पब्लिक भी चिल्ला रही थी । और कह रही थी । ''अरे इस बच्चे का कोई बाँप या माँ है कि नही ।'' तब पतिने पत्नी से कहा मीन्टु भूखा होगा उसे दूध पीला दे । पत्नीने कहा, दूध ही नहीं पी रहा है । तब पतिने क्रोधपूर्वक कहा उसे तो क्या उसके बाप को भी पीना पड़ेगा ।'' इसी प्रकार जो वाक्य पतिने क्रोधपूर्वक कहा वो अपूर्ण विवेकपूर्वक कहा क्रोध के विष में जब हमारे साथ लोगो की चर्चा होती है तो लोग कहते हैं कि जब क्रोध आये तब भगवान का नाम बोलना चाहिए, राम-राम जपना चाहिए . तो क्रोध शांत हो जाता है । परंतु मेरा मानना है कि जब क्रोध आता है तो व्यक्ति के मुख से राम के बदले हरामखोर नीकल जायेगा । गायत्री जप करने जाओगे तो गाली-गलोच, अपशब्द ही नीकलेगा । क्योंकि क्रोध अंधा होता है । क्रोध हंमेशा अपने से छोटी व्यक्ति पर ही निकल जाता है । जिस प्रकार पानी का प्रवाह उपर से नीचे की तरफ होता है उसी प्रकार क्रोध हंमेशा छोटी व्यक्ति पर ही निकल जाता है । द्रष्टांत - कोई व्यक्ति हो जाये अथवा कार्य में कोई भी भुल-चूक हो तो उसका बड़ा ओफिसर उसे धमकाएगा । परंतु वह ओफिसर अपने से बड़े ओफिसर को तो कुछ भी कहेगा । क्योंकि वह उससे बड़ा है । तो फिर वो अपना क्रोध किसके उपर निकाले । जब शाम को अपने घर जायेगा तो पत्नी कहेगी कि हाथ पैर धोलो तो अपने क्रोध को निकालने के लिये कहेगा कि क्या बक बक कर रही हो, दूसरा कोई काम नहीं है । पत्नी को भी क्रोध आया लेकिन विचार करने लगी की बड़ा झगड़ा हो जायेगा । इसलिये शांत रह गयी । इतने में बेटा स्कूल से आया पत्नी बालक पर क्रोध उतारते हुए कहने लगी - नालायक जहाँ तहाँ जूता-थैला फेंक देता है । ऐसा कहती हुई दो थप्पड लगा दी । बड़ा तूफानी हो गया है । दो दिन हुआ नहीं कि कपड़ा गन्दा कर दिया । बालक रोने लगा । वह विचार करने लगा कि मैं प्रतिदिन इसी तरह आता हूँ, इसी तरह फेंकता हूँ तो मां कभी कुछ बोलती नहीं है । आज क्यों ? अब तो बालक को भी क्रोध आगया । लेकिन वह क्रोध कहाँ निकाले । वह अपने रुम में जाकर डिंगली को लिया और क्रोध में उसका पैर तोड़ डाला । इसका मतलब यह हुआ कि क्रोध सदा अपने से छोटो पर उतारा जाता है । क्रोध करने वाला व्यक्ति क्रोध के समय अपने चेहरे को सीसे में देखे तो उसे खबर पड़ेगी की क्रोध के समय उसका चेहरा कैसा हो गया है । क्रोधी मनुष्य अपने को खत्म कर देता है । भगवान के मार्ग में चलने वाला भक्त भी यदि क्रोध करता है तो उसकी सभी तपस्या नष्ट हो जाती है । क्रोध के अंदर व्यक्ति जितना भी भोजन करेगा । वह साथ जल जायेगा ।

जिस प्रकार भभकती अग्नि के अंदर

चाहे जितना भी डाले सब जलकर राख हो जाती है। इसी तरह व्यक्ति जब क्रोध करता है तब उसका ब्लड जहर में बदल जाता है। यह वैज्ञानिकों की खोज है।

एकबार न्युयोर्क में सर्वेक्षण किया गया कि सबसे अधिक कौन क्रोध करता है। उस व्यक्ति को पकड़ा गया, उसके क्रोध करने की प्रतिक्षा की जा रही थी। उसी के सामने एक खरगोश रखा गया। जब उस क्रोधी व्यक्ति को क्रोध आया तो उसके शरीर से रक्त निकाल कर खरगोश के शरीर में डाला गया तो २० मिनट के बाद वह खरगोश जो प्रसन्न होकर खेलकूद रहा था। वह क्रोध में आकर अपनी शरीर को ही नोचने लगा। इस तरह करते हुए थोड़ी ही समय में मर गया। अब परिणाम का ख्याल आ गया होगा कि एक हसता खेलता स्वस्थ खरगोश क्रोधी व्यक्ति के खून से मर गया। इसी लिये वैज्ञानिकों की शोध है कि जब माता क्रोध में रहती है तो बच्चे को दूध नहीं पिलाती। कारण यह कि वह दूध उस समय जहर बन जाता है। भोजन करते समय तथा भोजन परसते समय शांत मन होना चाहिये। ऐसा करने से भोजन की सार्थकता होगी। अन्यथा क्रोध में लिया गया आहार जहर जैसा बन जायेगा।

एकबार एक हास्पिटल में तीन जगहों पर तीन बोर्ड बाहर लगा हुआ था जिसमें प्रथम बोर्ड पर लिखा हुआ था कि व्यक्ति को कुत्ता काटा है इसलिये चिंता करने की जरुरत नहीं, चौदर इन्जेक्शन लगने के बाद बच जायेगा। दूसरे बोर्ड पर लिखा था कि एक व्यक्ति को सांप काटा है, थोड़ा सीरीयस है लेकिन महंगी दवा के उपचार से बच जायेगा। लेकिन तीसरे बोर्ड की नोटीस को बांच कर बड़ा आश्चर्य हुआ जिस पर लिखा हुआ था कि आदमी-आदमी को काट लिया है इसके बचने की कोई संभावना नहीं है।

अर्थात् कहने का मतलब यह कि कुत्ते से, सर्प से पीडीत व्यक्ति उपचार से बच सकता है लेकिन इन्सान को जब इन्सान काट लेता है तो बचाना बहुत कठिन होता है। अब आप विचार कर सकते हैं कि इस खतरनाक क्रोध से बचने की क्या उपाय है, या शातं करने की क्या उपाय हैं। व्यक्ति-व्यक्ति पर जब क्रोध करता है तो उसे सांत करने की क्या उपाय है। सास बहु के ऊपर जब कोध करे तो उसे किस तरह शांत किया जा सकता है? जब व्यक्ति क्रोध करता है तब वह अपने में नहीं रहता लाल अंगारे के समान हो जाता है, उस समय उसे कैसे रोका जाय? इसकी उपाय यह है कि जैसे लाल अंगारे को शांत करने के लिये शीतल जल पर्याप्त है। दूध में उबाल आ रहा हो तो दोकण शीतल जल पर्याप्त है। इसी तरह घर में सासुमां भी बहुत क्रोधित हों तो उस समय मधुर वाणी रुपी छांटा डालने से शांत हो जायेंगी। ऐसा कहना है मां भूल हो गयी। मांफ करदो। इस तरह पुनः भूल नहीं होगी। ऐसा कहने से सासुजी शांत हो जायेंगी। जब कोई व्यक्ति आपके ऊपर क्रोध करे तो अपने में विवेक रखना चाहिये, नम्रता से बात करेंगे तो सामने वाला व्यक्ति शांत हो जायेगा। एक मकान में एक दम्पती रहते थे। प्रारम्भ में दोनो में खूब प्रेम था। कभी झगड़ा नहीं होता था। लेकिन थोड़े समय बीतने के बाद पत्नी को बहुत सारी इच्छा बढती गई और वह पूरा नहीं कर सका। जिस कांरण वह पत्नी पति से झगड़े में देर कर दिया। पत्नी के क्रोध की सीमा न रहीं। कितने दिन से साड़ी लाने को कह रही हूँ, मेकप लाने को कह रही हूँ, नहीं लाते ये। खूब बोलती गयी लेकिन पतिदेव शांति से सुनते जा रहे हैं। कोई उत्तर नहीं दिये तो पत्नी आग बरसाते हुए बोली कि क्यों गूंगे हो गये हो? क्या सुनाई नहीं देता अंत में तो यह भी कह दी कि आप तो जानवर हैं ऐसा कह कर चली गयी।

जब वह पत्नी नाराज होकर चली गयी तो थोड़े समय के बाद क्रोध शांत हुई तब उसे ख्याल आया कि अरे! यह मैने क्यां किया? पति परमेश्वर को अप शब्द कही। धिक्कार हमे। अब तो पति को प्रसन्न करने के लिये गरमागरम केशर मिश्रित दूध लेकर गयी। और कहने लगी हे पति इसमें तुम्हारी कोई गल्ती नहीं तुमने सत्य कहा है। मैं जानवर हूँ। नही हमने गल्ती से कहा, आप माफ कर दीजिए तब पतिने कहा तुमने जानवर सही कहा है। क्यों? सुनो जब से हम तुम्हारे साथ विवाह किये हम तुम्हारे क्या हुए? पत्नी कहा "जान" तथा जब से मेरे साथ लग्न ग्रंथि से जुड़ी तब से हम तुम्हारे क्या हुए? पत्नीने कहा "वर" तब पतिने कहा दोनो को मिला दो तो क्या हो जायेगा? तब पत्नीने कहा "जानवर" तो हम जानवर हुए या नहीं? इस प्रकार प्रेम मयीवाणी सुनकर पत्नी खुश खुशाल हो गयी।

इसका मतलब जब कोई व्यक्ति क्रोध करे तो उसे शांत करने के लिये प्रेम भरी वाणी का प्रयोग करना चाहिये। जिस प्रकार वन में सूखा एक वृक्ष स्वयं जलता है तथा सम्पूर्ण वन को जलादेता है। इसी प्रकार क्रोधरुपी अग्नि से जलता हुआ मानव स्वयं जलता है तथा पूरे परिवार को जला देता है। क्रोध मनुष्य का महान शत्रु है। क्रोध मनुष्य को अंधा बना देता है। क्षणिक क्रोधरुपी ज्वाला में स्वयं भस्मीभूत होजाता है। अरे! श्रीजी महाराजने वचनामृत में कहा है कि - क्रोधी मनुष्य या क्रोधी देवता हमें अच्छे नहीं लगते। भगवान के भक्त शांत एवं सतोगुणी होते हैं। हम भी आज संकल्प करें कि कभी क्रोध नहीं करेंगे। वस इसी का ध्यान रखना।

भक्त जिस दिनसे क्रोध नहीं करेंगे उसी दिन से प्रभु के हो जायेंगे। तब से हम प्रभु के सच्चे भक्त कह लायेंगे।

वचनामृत-कारीयाणी

साधु घनश्यामप्रकाशदासजी जमीयतपुरा (महंत स्वामी माणसा)

''महाराज - हे दीनानाथ आप की संमति लेकर अपनी घायल अंगुली को बचाने का कमजोर प्रयास करने को प्रेरित हो रहा हूँ । प्रसंग या मेरी मोत की भी शक्यात थी । अभी आपने जो प्रश्न पूछा उस प्रश्न को मैने अच्छी तरह सुना था । लेकिन कान कहीं अन्यत्र व्यस्त था फिर भी स्त्रियों की आवाज में यह सुनाई दिया था कि वह साधु घर संसार छोड़कर आया है फिरभी राग-द्वेष छोड़ता नहीं है । महाराज ! कोई चिंता नहीं चाहे जो भी कोई कहें हमे खराब नहीं लगता है । क्योंकि जब में मरणासन्त था उस समय आपने ही आत्मीय कृपा से मेरी आयु बढाकर स्वस्थ कर दिया था । महाराज निष्कपट भाव से भरी सभा में कहूँ तो आज मेरी बुद्धि बिगड़ गयी तथा सत्संग की माता के समान साधुता की मूर्ति जिसके ऊपर आप की अमिट कृपा है ऐसे मुक्तानंद स्वामी की मेरे ऊपर अनहद कृपा है । जिन्होंने मुझे बड़े प्रेम से अपने पास रखा है । दो पैसे के लिये इतने बड़े म.गु. की नासमझ के कारण मैं उपेक्षा कर सकता हूँ ? मैं सत्य कह रहा हूँ ऐसी भूल भूल मै भी कर सकता हूँ क्यां ? फिर भी आज भूल मैने की है । इसका कारण यह है कि उस वृद्धा की उम्र बढ गयी है जिस कारण मेरी मति भ्रमित हुई और मैं फस गया । इस लिए लज्जा का अनुभव कर रहाँ हूँ । इस कारणआपकी तथा मुक्तानंद स्वामी की मांफी मांगता हूँ । सभा में तालियों की गड़गड़ाहट के साथ हास्य व्याप्त हो गया बाद में मनोरंजन के वातावरण को रोकते हुए मुक्तानंद स्वामी ने गंभीरता धारण की ।

प्रश्न किया कि हे महाराज ! जो भगवान का भक्त हो उस में भगवान के प्रति अवगुण आजाय या भक्त के प्रति अवगुण आजाय तो उसे दूर करने की क्या उपाय है । इस प्रश्न के सन्दर्भ में भूल को स्वीकार करके भरी सभा में वयोवृद्ध संत ब्रह्मानंद स्वामी ने मांफी मांगी, उन्हे थोड़ा भी दुःख नहीं हुआ । आज इस स्वस्त्र से यह भासित हो रहा है कि दोष को छिपाने में दुःख होता है प्रकासित करने में प्रसन्नता होती है जो स्वामी के मुख विम्ब से प्रगट हो रहा है इस प्रकाशमय तेजोमय मुख को देखकर भगवान का हृदय द्रवित हो जाता है । ''जिसके हृदय में भगवान की भक्ति हो, भगवान की महिमा हो उस भक्त के हृदय में अवगुण नहीं आता'' । गणित की भाषा में देखे तो दो + दो = ४ होता है, इसके अलांवा त्रिकोण के तीनों कोने समान हो तो तीनो समान ही होंगे । उसी सिद्धात की यह बात है ।

''बीजी भक्त जन बहु करे
तेमां रहे गमतु मन तुं
पण प्रगट प्रभुनी भक्तिमां
रहे गमतुं भगवानुं ॥''

मनमाने ढंग से भजन गाते जाइये या पैदल चलकर यात्रा की जिए उसे भक्ति नही कह सकते या उसे महिमा मे सामिल कर सकते । गढपुर मंदिर का काम चल रहा था, उस समय एक साधु को माला फेरते देखकर श्रीजी महाराज ने कहा ''यह समय लकड़ी की माला फेरने का नहीं है । श्रीजी महाराज ने सभी के लिये यह एक उपदेश दिया है कि जिस समय जो कार्य करना हो वही करना श्रेयस्कर होगा । भगवान का भक्त हो, आश्रित हो, मन बुद्धि भगवान में अर्पित कर दिया हो, भौतिक, आध्यात्मिक सुख के दाता प्रभु में अपनी सम्पूर्ण देह दोह का व्यवहार छोड़कर प्रीति करने से परमपद की प्राप्ति होती है । जिसका मन श्रीहरि में सदा रहेगा उसमें भगवान के भक्त के प्रति अवगुण नहीं आयेगा । अमृतपीने वाले को मरण का भय नहीं रहता । इस प्रकार जो हरिरस का पान करने वाले हैं उनमें आसुरी वृत्ति कभी नहीं आती है । जिसके मन में जड़प्रकृति के प्रति थोड़ी भी भावना आई तो निश्चित समझना चाहिये की भगवान के प्रति निष्ठा कम है । मूल में कोई कमी रह गयी है । महिमा में कुछ कचास होगी । यदि भक्ति या महिमा भगवान में उत्तरोत्तर बढती जायेगी तो दिव्यता का अनुभव होने लगेगा । भक्ति के विना सभी रुखा है । वड़ताल में एक पार्षद ने एक भैंसे को लकड़ी से मारा तो भैंसेने भी अपनी सींग जब लगाई तो पार्षद भागने लगा । वह पार्षद आगे-आगे पीछे भैंसा, भागते भागते मंदिर के कक्ष में छिप गया, वह भैंसा उसी के आगे बैठा रहा । दूसरे दिन वह पार्षद स्नान के लिये बाहर निकला,

पुनः भैंसा उसके पीछे दौड़ा । वह पार्षद संतो के भीड़ में समा तो अवश्य गया लेकिन खोज लिया और मारने दौड़ा । यह प्रक्रिया उसके जीवन पर्यन्त चलता रहा भैंसे के मन में गांढ होने का परिणाम यहाँ तक हुआ कि पार्षद के मरने के बाद भी वह उसका पीछा नहीं छोड़ा, उसकी चिता की राख को अपनी सींग से बिखेर डाला । यह दृष्टांत विस्तार पूर्वक महाराज ने समझाकर कहा कि इस तरह की प्रतिखार अच्छी नहीं होती । अवगुण की गांढ भक्ति में बाधक है । भक्तों से अपेक्षा रखकर प्रभु आगे कहते हैं कि - "जिस प्रकार उद्धवजी भगवान की महिमा को समझते थे जिसके परिणाम स्वरूप भगवान से वरदान में मांगे कि मैं गोपियों के चरणरजका अधिकारी ऐसे वृन्दावन में लता-गुल्म इत्यादि के रूप में होऊँ । इस उद्धवजी के दृष्टांत को महाराज ने वचनामृत में ६ जगहों पर दिया है । वचनामृत सां. १५, का. ७, लो. १६-१७, म. १७ तथा ग.अं. २८ इन सभी जगहों पर एक मात्र उद्धवजी की चर्चा किये है । भक्तचिंतामणी, हरिचरित्रामृत सागर जैसे ग्रंथ में आना तो ठीक है, इस सैद्धान्तिक ग्रन्थ में रहस्योद्घाटन करके सिद्धान्त कहना तथा चर्चा करना यह महत्व का है । उद्धवजी को भगवान की महिमा तो थी ही लेकिन वरदान में चरण रज मांगा, गोपियों के चरणरज से पावन रहने के लिये वृक्ष, लता का अवतार लेने को मांगा । भगवान के छोटे-बड़े अवतार तो क्या जो सभी अवतार के अवतारी हैं ऐसे भगवान स्वामिनारायण के हृदय में स्थान प्राप्त कर लिए ।

पृष्ठ ४ से आगे.....

हे युवानो !!

वफादार रहना एवं पूज्यभाव रखना यही अपनी परम्परा है । धर्म संप्रदाय का गौरव है । समभाव की भावना, प्रेम-शांति, तथा सहकार ये सब होतो सत्संग की प्रगति होती है ।

मेरी ही प्रगति हो, हमें ही सुख-समृद्धि मिले ऐसी बुद्धि स्वार्थ की कहलायेगी ।

सत्संग में हम सभी को नाना प्रकार के स्वभाव वालों के साथ संपर्क करना पड़ता है । सत्संग के लिये गाँव-गाँव में सभा, शिबिर, ज्ञान यज्ञ में कभी कहीं निष्फलता मिले तो उदासीन नहीं होना चाहिए । कितने युवान प्रेमालु होते है वे प्रेम न हो जांय ।

हे युवानो ! आपको ऐसा होगा कि हमारा जीवन उत्तम बने, हम आगे बढ सकें । सत्संग में आगे बढना हो तो हमें क्या करना चाहिए ?

प्रथम तो आप अपने संढिगत विचारों में परिवर्तन लाइये और संस्कारो में भी परिवर्तन लाइये तभी सत्संग में विकास लाना संभव है । जीवन के व्यवहारों में परिवर्तन आवश्यक है । विचारों में पक्षापक्षी से दूर रहकर यथार्थ का ज्ञान करके अपने जीवन में एक नई दिशा बनानी चाहिये । युवानों को सदा अच्छे साहित्य का वांचन करना चाहिये । जिससे विचार शील बन सकें । अपने जीवन की रचना खुद करनी होगी । सफलता निष्फलता दोनो को स्वीकार करना सीखो । निष्फलता में सफलता छिपी रहती है । अपने से श्रेष्ठ जो भी हों उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिये ।

भगवान हमें मृत्युलोक में जन्म दिये हैं । वह इसलिये कि हम संत्संग में असामान्य बन कर सत्संग का कार्य करते हुए भगवान को पहचान सकें ।

सिद्धि प्राप्ति के लिये प्रेरणा प्राप्त करके अंदर की जीवात्मा को जागृत करना चाहिये । आपको किस विषय में आगे बढना है, सफलता प्राप्त करनी है, उसका ज्ञान करके प्रयत्न करना चाहिये । विषय का ज्ञान जन्म जात नहीं होता । किन्तु उसे विकसित करना पड़ता है ।

आपके कार्य करने की रीति आपके जीवनमें परिवर्तन ला सकती है । युवान सदा उत्तम विचारों से काम करतें रहें तो उत्तरोत्तर प्रगति का मार्ग मिलता रहेगा । जीवन में विकास के लिये सतत प्रयत्न करते रहना चाहिये । श्रीजी महाराज ने वनचामृत में भी कहा है कि "पत्थरपर रोज डोरी से घिसा जाय तो रेखा बन जाती है । जमीन पर प्रतिदिन लगातार पानी की धार चालू रहे तो गड्ढा भरजाता है । इसी तरह जीवन में नियमित सत्संग करना चाहिये । जैसे जिसे अभ्यास करना हो तो अच्छे अक्षर, उत्तम पुस्तिका, वांचने में एकाग्रता, सुनने में एकाग्रता जिसमें हो वह कुशल विद्यार्थी कहा जा सकता है । आपका कार्य स्वयं करिये उसी में आपकी सफलता है । आप अपने अभ्यास काल में भी मानव जीवन के उत्थान की प्रक्रिया को अवश्य पढे होंगे । नगर किस तरह विकसित हुए ? मनुष्य में प्रयत्नो के बल से आदि मानव से लेकर आज के कम्प्युटर युग तक का परिवर्तन कैसे हुआ ? मनुष्य के प्रयत्न से प्रत्येक कार्यो में प्रगति होनी आवश्यक है । इसी तरह सत्संग में आगे बढने के लिये ज्ञान, वैराग्य, धर्म तथा भक्ति की दृढता करके मोक्ष के मार्ग में रात दिन आगे बढते रहना चाहिये । इसके लिये संत, शास्त्र, देवदर्शन करना आवश्यक है । यही सत्संग की वसंत को प्रफुल्लित करने में एक मात्र सहायक है ।

ओकलेन्ड (I.S.S.O.) न्युझीलेन्ड में साकार हो रहा बेनमून अपना श्री स्वामिनारायण मंदिर

परमकृपालु सर्वावतारी श्रीहरिने अपने हाथों से अहमदाबाद मंदिर में सर्व प्रथम अपने स्वस्त्र को जहाँ प्रतिष्ठित किया ऐसे महाप्रतापी कृपालु परमात्मा श्री नरनारायणदेव की कृपा से श्री नरनारायणदेव देश विभाग की विदेश में कार्यरत संस्था (I.S.S.O.) अब दुनिया के बहुत सारे देशों में विकसित होती जा रही है। विगत कितने समय से न्यूझीलेन्ड में श्री नरनारायणदेव देश विभाग का भव्य नूतन मंदिर तैयार हो रहा है। जिसका सम्पूर्ण श्रेय अपने आचार्य महाराजश्री के कृपापात्र तथा श्री नरनारायणदेव के आश्रित ऐसे डॉ. कांतिभाई को है। जिसके पुरुषार्थ, निष्ठा तथा समर्पण की भावना से यह मंदिर दृष्टिगोचर हो रहा है। थोड़े समय में इस मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से श्रीहरि की आज्ञानुसार सम्पन्न होगी। इस प्रतिष्ठा प्रसंग में उपस्थित रहने के लिए ओस्ट्रेलिया, यु.के., अमेरिका, आफ्रिका इत्यादि देशो में रहने वाले सत्संगी उतावल हो रहे है।

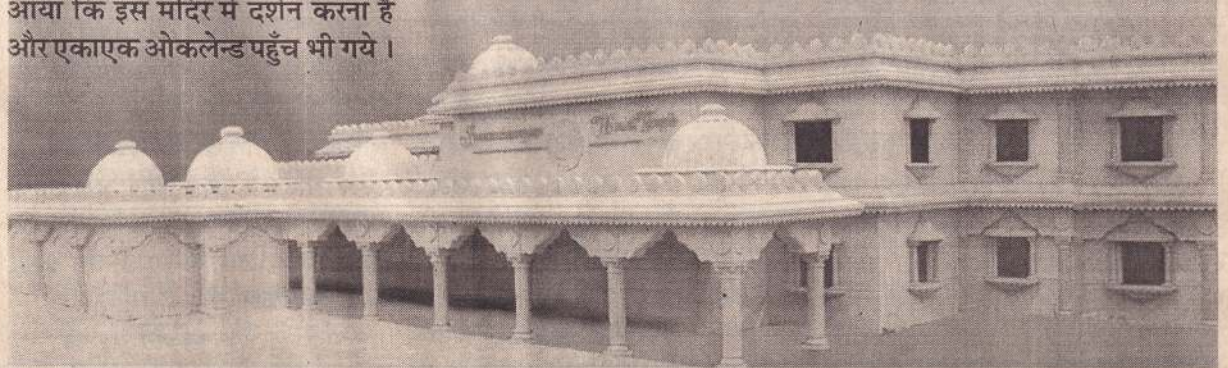
अपने निवृत्त आचार्य प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री को विचार आया कि इस मंदिर में दर्शन करना है और एकाएक ओकलेन्ड पहुँच भी गये। स्वयं निरीक्षण करके मंदिर का छाया चित्र लिये। वहाँ के सत्संगियों में महाराजश्री के एकाएक आने से आनंद की सीमा ही न रही। सभी को ऐसा हो रहा था कि कहीं यह स्वप्न तो नहीं हैं? ऐसे बहुत सारे शब्दों से सम्बोधन करते हुए वहाँ के सत्संगी अपने जीवन की धन्यता का अनुभव किये।

इस निर्माणाधीन मंदिर की रूपरेखा अधो निर्दिष्ट है। न्युझीलेन्ड तथा ओकलेन्ड के दक्षिण विस्तार में भारतीयों की घनी बस्ती है। करीब ३० हजार जितने भारतीय इस विस्तार में रहते हैं। इस विस्तार में इ.स. १९५५ में एक चर्च था। इस चर्च की जगहको श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से इ.स. २००३ में आई.एस.ऐस.ओ. संस्था ने मंदिर के लिए सम्पादित की थी। ओकलेन्ड के अपने हरिभक्त डॉ. कांतिभाई तथा अन्य हरिभक्तों ने एक वर्ष के भीतर प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से इस मंदिर की भूमिपूजन विधि करवाई थी।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा संतो के मार्गदर्शन में संप्रदाय के शिल्प स्थापत्य परम्परा के अनुसार भारतीय परम्परा की डिजाईन तैयार की गयी। इस मंदिर निर्माण कार्य में न्यूजीलेन्ड के सत्संगियों के लिए संकट रूप था। कारण यह कि ऐसा कार्य कभी किया नहीं गया था। मंदिर निर्माण के लिये साधन तथा आर्किकेटर प्लान की मान्यता प.पू. आचार्य महाराजश्री की इच्छा-संकल्प से इ.स. २००४ में मिली।

प्रत्येक अच्छे कार्य में विघ्न आता है इसी तरह इस कार्य में विघ्न संतोषी लोगों द्वारा विघ्न उपस्थित किया गया था। वे लोग इस प्रश्न को न्युजीलेन्ड केन्द्र सरकार तक ले गये थे। परंतु श्रीजी महाराज तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से आई.एस.एस.ओ. संस्था को मनाकु शहर के मेयर का सहयोग मिला और यह कार्य पूर्ण हो सका।

● **मंदिर के बाहर के निर्माण कार्य का भाग :** मंदिर का निर्माण कार्य जी.आर.सी. (ग्लास री, इनफोर्स क्रोंकिट) प्रकार का बनाने के लिए निर्णय लिया गया। इस प्रकार के निर्माण



कार्य से फायदा यह है कि उसका आने वाला खर्च कम होता है तथा पत्थर को पकड़े रखता है। इस प्रकार के निर्माण कार्य से अपने हिन्दू परम्परा के मंदिरो का हावभाव बना रहता है।

● समस्याओं के बीच निर्माण : (१) पेनल के उत्पादन करने के लिये चाईना स्थित बड़े से बड़े जी.आर.सी. मेन्यु फेक्चर प्राप्त करना बहुत कठिन काम था। (२) विविध पेनलों के लिए मोल्डस बनाने के लिए भारतीय मोल्ड मेकर्स को चीन भेजना। (३) निर्मित पेनलों को समुद्रीमार्ग से न्यूजीलेन्ड भेंजना। (४) तैयार किये गये पेनल्स को एकमीटर को हजार में भाग देने जितनी सतर्कता के साथ फिट करना। (५) सभी जी.आर.सी. कार्य मीलीमीटर जितना सूक्ष्मतम माप के साथ एक ही लाईन में योग्य ढंग से लगाना अत्यंत आवश्यक है। मात्र थोड़ा फेरफार करने से सम्पूर्ण पेनल नक्कामी हो जाती है। जिससे उसे तोड़ देना पड़ता है।

● समस्या का निराकरण : (१) जी.आर.सी. क्षेत्र में विश्व अग्रगण्य कंपनी से जी.आर.सी. बना, टेकनीकल ज्ञान, दिया गया जिसका फायदा मंदिर निर्माण में मिला। (२) जी.आर.सी. मोल्डस बनाने के लिए आठ शिल्पकारो की तीन महीने के लिए चीन भेंजा गया। (३) विश्व की सबसे बड़ी जी.आर.सी. कंपनी से मोल्डस चीन में बनाया गया। (४) ४० फूट जितने बड़े २८ जितने कन्टेनर जी.आर.सी. के सामान को न्युजीलेन्ड ले गये। (५) जी.आर.सी. के ५०० जितने टुकडे, जिसमें कुछ तो २ टन से ज्यादा वजन के थे उन्हे न्युजीलेन्ड लाया गया। ये सभी सामान उठाने के लिए क्रेइन की जरूरत थी इस लिए फीक्स तथा एक घूमने वाली क्रेन एक साल के लिए भाड़े रखी गयी थी। (६) इन टुकडो को लगाने के लिए पांच स्थापक होंगकोंग से तथा चीन से बुलाये गये थे जो वहाँ पर ३ महिना तक रहे (७) २२ जितने बहार के जी.आर.सी. के मोल्डेड झरुखे इस मंदिर को भारतीय स्प देते है। (८) इस मंदिर के समस्त शिखर जी.आर.सी. से बने है।

● मंदिर के अंदर का हिस्सा : (१) १४,००० फूट जितना ग्रेनाईट जमीन तथा दिवाल पर लगाना तथा ग्रेनाईट फिनीसींग अच्छी तरह खत्म हुआ। (२) जाडे की ठंडी में ग्रेनाईट की ठंडी कम करने के लिए अंडर फ्लोर हीटींग की व्यवस्था के लिए सूर्य उर्जा के यंत्र लगाने के लिये फ्लोर तोड़ा गया। (३) अंदर की दीवालो की ग्रेनाईट पेनल तथा लकड़ी की पेनल से जोड़ा गया था। तथा उसे लकड़ी की डिजाईन से अलग किया गया जिससे उसे प्राचीन भारतीय महल का स्प दिया जा सके।

● काव्य कला निर्माण : (१) १०,००० क्युब कुह जितनी लकडी काष्टकला का कार्य के लिए ४० फूट बड़े कन्टेनर में भारतसे समुद्र मार्ग से लाया गया था। (२) मंदिर के काष्टकला में निपुण ११ शिल्पकार पीछले १२ महीने से फिनीसींग के लिए दिन-रात कार्य कर रहे है। (३) काष्टकला वाली दिवालो की पेनल, प्रवेश द्वारा तथा २२ जितने जरुखे अद्‌भुद लगते है। (४) मंदिर के अंदर की तरफ शिखर की संख्या चार है जो जिस पर सुंदर काष्टकला अति सूक्ष्म स्प से की गयी है। (५) यह संपूर्ण कार्य आर्कीटेक की निपुणता तथा सीटी काउन्सील तथा फायर डिपार्टमेन्ट की विशेष सहायता से बनी है।

● सिंहासन : सिंहासन पर डेढ टन वजन वाला कमानाकार का अद्‌भुत छत है यहाँ पर कोई खंभे नहीं है। जिससे देव दर्शन किसी भी तकलीफ के बगैर हो सकता है। इस सिंहासन पर १८ शिखर आये है इस सिंहासन के निर्माण के लिए ४० कारीगर छ महीने तक कार्य किये है।

● भगवान के लीला चरित्र : लकड़ी से बने विविध दीवालो पर स्वामिनारायण भगवान के जीवन चरित्र को फिस्को रंग से बनाया गया है।

● गीतोपदेश चित्रण : होल से स्टेज के पीछे फिस्को रंग से २३x१३ फूट बड़ी लकड़ी पर भगवान कृष्ण का गीतोपदेश का चित्रण किया है इस रथको बहुत किंमती धातु से सजाया गया है।

● गर्भ गृह : ऑकलेन्ड (न्युजीलेन्ड) के स्थानिक लोगों को भगवान श्री स्वामिनारायण के लीला चरित्र तथा उनके उपदेश से सभी को यथार्थ ज्ञान कराने के लिये मंदिर के गर्भगृह के अन्दर प्रारम्भ से लेकर स्टेज के पीछे तक भगवान श्रीकृष्ण के गीता उपदेश का भित्ति चित्र तथा भगवान श्री स्वामिनारायण के अलौकिक जीवन चरित्र की विविध मूर्तियां स्थापित की जायेंगी। जो इस मंदिर के मुख्य आकर्षण का केन्द्र होगा।

● मंदिर के निर्माण की पद्धति : मंदिर में मुख्य तीन विभाग है - (१) मंदिर (२) मुख्य होल (३) फ्लोर होल। इन तीनो भाग की डिजाईन ऐसी बनाई गयी है कि अलग-अलग होते हुए भी जब कोई बड़ा उत्सव हो तो एक साथ उपयोग किया जा सकता है।

● मंदिर में तीन रसोई घर बनाया गया है। जिसमें एक बड़े प्रसंग के लिये, दूसरा देव के लिए, तीसरा अन्तरंग उत्सव के लिये बनाया गया है।

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १२

सत्संग सुरभि

"हम तो जीव के अपराध क्षमा करने बैठे हैं"

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदाबाद)

श्रीजी महाराज एक समय घोड़े पर विराजमान होकर धूमने निकले थे। साथ में काठी दरबारों का संघ था। "आज आप को किस तरफ जाना है ख्याल है? गुजरात की तरफ या कच्छ की तरफ? श्रीजी महाराज अपने मित्रों से पूछा। "महाराज! गुजरात के गाँव एवं भक्तों को देखने जाना है। उसमें भी वड़ताल तो अपना स्थान है। इसलिये उधर ही चलते हैं, भक्तों ने कहा!

महाराज के साथ सम्पूर्ण संघ कीर्तन-आनंद करते हुए गुजरात पहुँच गया। सात-आठ गाँव चले होंगे कि हलुआ खाने का समय हो गया।

महाराज! अब तो गाड़ी रूक गई। छाछ पिलाईये, अब एक पगभी आगे नहीं बढ पा रहे हैं। हमारे रूकने पर तुरन्त रोटी चाहिये। हम आप के साथ थोड़ा सुधरे हैं। फिर भी इस समय छाछ तो चाहिए। सभी मित्र एक साथ हंसते हंसते महाराज को कहने लगे कि क्या हलुआ की व्यवस्था हो सकती है।

यदि आप सभी को छाछ पीना हो तो धीरज रखना पड़ेगा। नजदीक के गाँव में एक पटेल मेरा सत्संगी रहता है। मैं उसके घर जाता हूँ।

भगवान भक्त वत्सल है, कोई भी जीव उनके योग में आता है तो उसके सभी मनोरथ पूर्ण कर देते हैं। सहजानंद स्वामी भक्तों के साथ खूब प्रेम करते थे। अपने प्रेम की डोरी में सभी को बांध रखते थे। अच्छा आप लोग यही बैठिये। हम अकेले सामने वाले गाँव में जाकर पटेल के घर से छाछ-पानी की व्यवस्था करते हैं। ऐसा कहकर महाराज अकेले ही घोड़ी पर सवार होकर चल दिये।

सत्संगी पटेल रोटी बनवाकर तैयार कराया था। दोपहर के समय ठाकुरजीका भोग लगाकर कुटुंब के साथ खेत के आदमियों के साथ भोजन करूँगा ऐसा विचार किया था। इतने में भगवान स्वामिनारायण को द्वार पर खड़ा देखकर आश्चर्य युक्त हो गया।

"अहो, आप अकेले यहाँ कहाँ से? आईये भोजन तैयार है। पटेल ने प्रेम से कहा।

हम अकेले नहीं खायेगे, मेरे साथ सात काठी दरबारों का संग है। महाराज उन सभी को भी हो जायेगा हमारे यहाँ तो छाछ-रोटी तो सदा अधिक ही रहती हैं।

पटेल पहचान गये। भगवान को भोजन कराना अक्षरधाम के मुक्त काठी दरबारों का समागम करना। पटेल अंतर में श्रीहरि को उतारते गया एवं कहता गया कि "आप को दूर के यहाँ जाना हो तो वहाँ का बन्द करके हमारे यहाँ अपने मित्रों के साथ यहीं भोजन कीजिए। इतना कहकर महाराजको दालान में बैठाकर अन्य भक्तों को लेने गये। निष्ठावान एवं स्नेह की जिसमें अधिकता हो वह पहचान जाता है। पटेल किसी से पूछे विना काठी दरबारों को साथ ले आया। सभी को ठहरने की व्यवस्था की। घोड़ो के चारा की व्यवस्था की। महाराज को उच्च आसन पर विराजमान करके रोटी शाक प्रेम पूर्वक परसे। काठी दरबारों को भी बड़ी श्रद्धा के साथ पंक्ति में बैठाकर भोजन कराये। पटेल दो हांडी घी रखे थे, उनके मन में हुआ कि आज इस घी का सही उपयोग है। इसलिए घड़े का घी बाहर निकाल लाये।

परंतु पेटल की पत्नी स्वामिनारायण की सत्संगी नही थी। घी लाते देखकर पत्नी झगड़ा प्रारम्भ कर दी। इन सभी को क्या घी खिलाना। सभी घोड़े की तरह तो हैं। मेरे हाथ में घी बनाते-बनाते छाला पड़ गये। कभी बच्चों को भी पूछे हो? यह कहकर घी का घड़ा रखवाना चाहती है।

पटेल समझ गया की इस समय पत्नी को समझाने से काम नहीं होने वाला है। हमें घी खिलाना हैं ऐसा कहकर जबरदस्ती से घी का घड़ा लेकर बाहर निकल आये। पटेल सभी को प्रेम पूर्वक भोजन कराये। जिस के संकल्प मात्र से अनंत कोटि ब्रह्मांड को तृप्ति मिलती है, उसे हमारे छाछ-रोटी की क्या जरूरत? ये तो हमारे भाव को पूर्ण करने आये हैं। भोजन तथा घी से सभी को तृप्त कर दिये। बाद में श्रीहरिका पूजन किये। भोजन के पश्चात् मुख शुद्धि लेकर सभी विदा हुए। पटेलने सभी को बड़े भाव के साथ विदा किये। महाराज! इसी तरह का प्रेम सदा मिलता रहेऐसी कृपा करना। ऐसा कहकर प्रेमवश पटेल गदगद हो गया। महाराज पटेल के माथे पर हाथ रखकर आशीर्वाद देकर आगे बढ़े।

काठी दरबार तो इस प्रकार रोटी-शाक-छाछ एवं घी का आहार खाकर अति प्रसन्न थे। महाराज से कहने लगे

महाराज ! पटेल भक्त तो बड़ा उत्तम भक्त हैं । इसी तरह सदा स्वादिष्ट भोजन कराते रहियेगा ।

हरिभक्त तो अच्छा है लेकिन उसकी पत्नी कुछ विचित्र है । जब हमलोग भोजन कर रहे थे उस समय पटेल घड़े का घी लेकर बाहर आ रहा था लेकिन पत्नी उस घड़े को पकड़ लिया, खींचा खींची में घड़े का मुख पत्नी के हाथ में रह गया नीचे के भाग में घी था जिसे महाराज को तथा भक्तों को खिलाया ।

कुछ समय के बाद पत्नी की मृत्यु का समय आया । उस समय भगवान स्वामिनारायण घड़े का अग्र भाग लेकर आये । उस स्वरूप में श्रीहरि को देखकर महिला पहचान गयी । महाराज आप के भक्तों के लिए हमने लोभ किया था फिर भी मेरे अंत समय में आप आये है ।

भगवान स्वामिनारायण ने कहा कि हम तो जीव के अपराध को क्षमा करने के लिये बैठे हैं । अवगुण को हम कभी नहीं देखते । भाव कुभाव चाहे जैसे भी हमारी जो याद करता है मै उसका कल्याण करता हूँ । ऐसा कहकर स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज उस महिला को दिव्य गति प्रदान करदी ।

"शरणागत पाप पर्वतं
गणयित्वा न तदीय सद्गुणम् ।
अणुमप्यतुलं हि मन्यते
सहजानंद.गुरु भजे सदा ॥

पृष्ठ १० से आगे.....

ओकलेन्ड

• प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा संतो के निवासार्थ चार बेडरुम वाले फ्लेट की व्यवस्था भी की गयी है ।

• मंदिर-संकुल का भावि उपयोग : इस संकुल का धार्मिक उपयोग के लिए किया जायेगा । इसके साथ सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक, संगीत, भाषा जैसे नाना विध कार्यो के लिये उपयोग किया जायेगा ।

• मंदिर संकुल के निर्माण में समस्या : इस मंदिर के निर्माण में कारीगरों के लिए एक समस्या थी । इस बड़े कार्य को न समझने के कारण बड़े-बड़े कोन्ट्राक्टर सफल नहीं हो सके तो अंत में भारतीय कोन्ट्राक्टर श्री रमेशभाई द्वारा यह कार्यारम्भ किया गया । स्थानिक बिल्डरों के अनुसार २५ टाउन हाउसींग में लगे इतनी लकड़ी लगी है । इसके साथ जी.आर.सी. पेनल्स तथा सभी प्रकार के लकड़ियो में कोतर का काम बहुत अच्छे ढंग से किया गया है । कई टन स्टील भी लगी है ।

• विशिष्ट मटीरीयल्स तथा कीमती धातु : दीवाल तथा पेनल्स एवं अनेक प्रकार के गहने, चांदी जैसी कीमती धातुओं का भी खूब उपयोग किया गया है ।

• पेईन्ट्स : लकडे की पेनल्स में सोना तथा चांदी का उपयोग किया गया है । ये सभी पेईन्ट्स फायर प्रूफ हैं । किसी भी विपरीत वातावरण का सामना कर सकते हैं ।

इस तरह यह भव्य - अद्वितीय भारतीय संस्कृति तथा संप्रदाय के शिल्पशैली से बना हुआ यह मंदिर भक्तों की इच्छा पूर्ण करने वाला होगा । २००८ वर्ष में श्री नरनारायणदेव पीठाधीश्वर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान के अर्चा स्वरूप की प्राण प्रतिष्ठा शास्त्रोक्त विधि से धूमधाम के साथ सम्पन्न होगी । जिस में प्रतिष्ठित होकर सर्वावतारी श्रीजी महाराज न्युजीलेन्ड में रहने वाले सभी भक्तों के मनोरथ को पूर्ण करेंगे । उस समय यहाँ के डॉ. कांतिभाई पटेल तथा अन्य हरिभक्तों का संकल्प एवं प.पू. बड़े आचार्य महाराजश्री तथा वर्तमान पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ऑकलेन्ड में मंदिर का संकल्प पूर्ण हुआ दिखायी देगा । यहाँ दर्शन के लिए आनेवाले प्रत्येक भक्तों का सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण सभी मनोरथ पूर्ण करेंगे । कारण यह कि स्वयं उन्हीं के अपर स्वरूप द्वारा प्रभु की प्रतिष्ठा होगी। शि.प. के ६२ वें श्लोक में "जिस श्री कृष्ण के स्वरूप की प्रतिष्ठा स्वयं धर्मकुल में उत्पन्न आचार्य महाराजश्रीने की हो उसी स्वरूप की सेवा पूजा, उपासना, नमस्कार करना उचित है दूसरे को नहीं ।

उत्तरायण के पुण्य पर्व पर दान पुण्य

भारत वर्ष के पुण्य पर्वों में उत्तरायण की महिमा अलौकिक है । मकर राशि में सूर्य का प्रवेश या संक्रांति काल अत्यन्त शुभ बताया गया है । इस मंगलकारी अवसर पर दान पुण्य अनेकों गुना पुण्य कारक कहा गया है । इस पुण्य काल में दिया गया दान इसलोक में सुख समृद्धि तथा परलोक को देने वाला कहा गया है ।

तो ऐसे सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री की उपस्थिति में एवं ब्रह्मनिष्ठ संतो की उपस्थिति में इस प्रकार सेवा के शुभ प्रसंग का स्वागत करके सेवा में सहभागी होकर भाग्यशाली बनें ।

नोंट : सेवा का कार्ड अहमदाबाद, कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर, कोठार की ओफिस में कोठारी स्वामी के पास प्राप्त कर सकते हैं ।

महंत स्वामी का
श्रीहरि स्मृति सहित
जयश्री स्वामिनारायण

सत्संग भालपोथिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

अक्षरदालान की वात

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

स्वामिनारायण हरे .... संवत् १९८० कार्तिक कृष्ण एकादशी के दिन स्वामीश्री सहजानंदजी महाराज श्री गढड़ा के मध्य में दादा खाचर के दरबार में विराजमान थे।

मंदिर में कथा हो रही थी। जिस में एक संत वचनामृत वांच रहे थे। आगे बड़ी संख्या में हरिभक्त बैठे थे। वचनामृत में ऐसा एक प्रसंग आया कि - कोई राजा हो उसके यहां अलग निवास, सेवक सेविकाओं का निवास, तथा अन्य महल होते हैं। बाग बगीचे अश्वशाला, हाथी शाला इत्यादि की भी व्यवस्था होती थी। जिसे आज की भाषा में बड़ा फार्म हाउस, महंगी गाडी, अपार संपत्ति हो तो उसे राजा का दरबार कहा जायेगा।

इसी तरह जिसकी आज्ञा में इन्द्रादिक देवता अपने लोक में रहकर नाना प्रकार के अपरंपार सुख भोगते है, जिसके रोम रोम में अनंत कोटि ब्रह्मांड समाया हुआ है, ऐसे भगवान की महिमा क्यों होगी इसका विचार कर सकते हो ? मित्रो ! ऐसे भगवान स्वामिनारायण का प्रताप कैसा होगा ? प्रभु एक अंगुली ऊपर करें तो हजारों भक्त अपना जीवन अपना बैभव समर्पित करने वाले थे।

फिर भी भगवान स्वामिनारायण अपने लिये क्या बनाये ? कुछ भी नहीं बनाये।

प्रभु की इच्छा से वचन से अहमदाबाद, मूली, भुज, वड़ताल, गढड़ा, जूनागढ, धोलेरा, धोलका, जेतलपुर इत्यादि धर्म स्थलो पर बडे-बड़े मंदिर बन गये। सं. १८७८ से लेकर १८८५ तक इतने ही थोड़े समय में इतने विशाल मंदिरो का निर्माण हुआ। फिर भी भगवान स्वामिनारायण अपने लिये कोई स्थान नही बनाया। जिसे हम अक्षर दालान कहते हैं वह कैसी थी ? अपने संप्रदाय के शास्त्रों में लिखा है कि नीचे का भाग मिट्टी का था जिसे गोबर से लिपा जाता था। दिवाल गारामाटी से बनी थी। पत्थर एवं मिट्टी से बनी दीवाल तथा ऊपर के भाग का नरिया से बनाया गया था। फैक्टरी में नरिया बनती है वह नहीं - जिसे हाथों से बनाया जाता है वह। जिसे देशी नरिया कहते हैं, प्रजापति अर्थात् कुम्भकार जिसे बनाते हैं। बांस के छाजन में मिट्टी के सहारे उस नरिया को लगाया गया था। अपने इष्टदेव भगवान स्वामिन्नारायण "अक्षरदालान" में जिसमें कोई विशिष्टता नहीं थी उसी में रहते थे।

एकबार ऐसा हुआ कि गर्मी में ऊपर की नरिया तपने लगी तो पार्षदों ने घास डाल दिया, जिससे गर्मी कम लगे। यह देखकर सभी भक्त-पार्षद-संत विचार किये कि सदा महाराज यहीं रहते है। गर्मी के समय में नरिया खूब तपती है। महाराज को तकलीफ होती है, तो हमलोग मिलकर एक श्रम करें - जिससे चूने का एक पक्का मकान बन जाय। यह सुनकर सभी ने निश्चित किया और सभी अपनी शक्ति के अनुसार कोई सौ रुपये, कोइ इससे अधिक कोई वस्तु कोई सेवा करने का संकल्प किया।

इसकी खबर महाराज को पड़ी। महाराज ने पूछा कि यह पैसा क्यों एकत्रित कर रहे हो ? भक्तों ने कहा हे महाराज ! अक्षरकक्ष को पक्का बनाना है।" यह आप सब को किसने कहा ? तब सभी ने एकसूत्र में किसी का नाम दे दिया। महाराज ने कहा उसे बुला ले आईये। वे लोग बुला लाये तो महाराजने कहा कि यह अक्षरकक्ष को पक्का बनाने का विचार आप को क्यों आया ? आप जिससे पैसा लिये है, उन सभी का गिन-गिनकर वापस कर दीजिये।

प्रभुने कहा "यह जो कक्ष है वही ठीक है। महाराज की आज्ञा हुई कि सभी को पैसे वापस कर दिये गये। लेकिन प्रभु की इस सादगी एवं निर्लिप्त विचार को समझाना कठिन है। भगवान स्वामिनारायण के वचनों से हम सभी को उत्तर मिल गया होगा कि जिस अक्षरकक्ष में बड़ी सादगी से महाराज रहते थे वहीं प्रभु का दिव्य अक्षरधाम है। इसीलिये प्रभुने उसे बदलने के लिये मना कर दिया। इसके साथ ही प्रभु के सादगी जीवन से हमें भी शिक्षा मिलती है, सादगीमय जीवन जीने की। कस्गानिधी की कैसी कस्गा ? (निर्गुणदास स्वामी के वातों के आधार से)

•

मौन रहने से भजन बढती है

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

मित्रों ! शरीर में अशक्ति आजाय तो क्या करना चाहिये ? शरीर को पौष्टिक आहार देना चाहिए। लेकिन मन की अशक्ति दूर करने की क्या उपाय है ? आप जानते हैं कभी मनुष्य स्वभाव वश तनाव युक्त रहता है, कभी क्रोध के कारण स्वभाव बिगड़जाता है। कभी मन चंचल हो जाता है। यह सभी मन की अशक्ति का लक्षण है। इसकी क्या दवा है ? जानते हैं ? आप नहीं जानते तो सुनिये। जिन्दगी में मौन रहना सीखिये इस वात को संत दृष्टांत देकर समझाते हैं।

एक प्रख्यात संगीतकार था। जब वह वीणा बजाता तो लोगों की भीड़ लग

जाती थी। बड़े-बड़े शहरों में उसका रंगमंच बनाया जाता था। खूब पैसे आते। एकबार पैसों की पोटली बांधकर कंधे पर लटकाकर, हाथ में वीणा लिये हुए अपने गाँव जाने के लियेनिकल पड़ा। जंगल में से जा रहा था उसी समय सामने चार चोर मिल गये। सब कुछ उसका लूट लिये। वीणा भी ले लिये। अब कलाकार पुक्का छोड़कर रोने लगा। जमीन पर लोटने लगा।

चोरों को दया आ गयी। वे कहने लगे इसका सब लेलिए है, इसमें से थोड़ा वापस कर देते हैं। वापस आकर कहने लगे "ले तुम्हारे राह खर्च के लिये देते हैं। चल खड़े होजा यह पचास रुपये लेकर चलते बन। मुझे पचास रुपये नहीं चाहिये। वह कलाकार जोरजोर से रोने लगा। तो तुम्हें क्या चाहिये ? मेरी वीणा वापस करदो। रुपयेनहीं चाहिये। लेकिन वीणा में क्या रखा है। रुपये होंगे तो घर जा सकेगा। मुझे तो मेरी वीणा ही दीजिये। उस कलाकार की बात सुनकर चोर कहने लगे कि हम सुने हैं कि कलाकार मूर्ख होते हैं। आज यह बात सत्य निकली। हम पैसे दे रहे हैं उसे नहीं ले रहा है, जिसमें दो तार बांधा हुआ है ऐसा डिब्बा मांग रहा है। दे दो उसकी हमें क्या जरुरत हैं।"

बाद में चोरो ने वीणा दे दी। वीणा पाकर कलाकार प्रसन्न होकर, वीणा के तारों को कसा और संगीत प्रारम्भ कर दिया। ऐसी संगीत उसने बजाया कि चोरों का हृदय द्रवित हो गया। जो उसका धन था उसे तो वापस किये ही, उसके अलांबा अन्यत्र का चोरी का धनभी उसे दे दिये। यह सब हमारी तरफ से आपको सप्रेम भेंट। हम सब आप के ऊपर प्रसन्न हैं ऐसा कहते हुए उसके संगीत की प्रसंशा किये।

मित्रों ! जिस प्रकार वीणा की संगीत, इसी तरह मौन की भी एक दिव्य संगीत होती है। इस मौन संगीत में इतनी शक्ति है कि जो आपकी शक्ति चली गयी है वह वापस आजायेगी।

जिस प्रकार कलाकार के धन को चोर लूट लिये थे, इसी तरह अपने धन को कौन लूट रहा है ? काम, क्रोध, लोभ, मोह ये सभी महान चोर हैं। मन (आत्मा) की शक्ति लेकर चले जाते हैं। आप इन चोरो के सामने आयेंगे तो हार जायेंगे। मौन रहो। यह मौन ऐसा संगीत है कि लूटाई हुई सभी संपत्ति वापस आजायेगी। घर में होने वाले झगड़े, अथवा व्यवहारिक तनाव से बचने के लिये या जिंदगी में शांति से जीने के लिये मौन एक महान शक्ति है। जो मन की अशक्ति को दूर करता है। इसके अलांवा मौन से भी अधिक श्रेष्ठ इष्टदेव की भजन है। स्वामिनारायण भगवान ने कहा है कि "जब मन अशांत हो उस समय भगवान के नाम का संकीर्तन या भजन करना चाहिये। चाहे कितना भी तीनों प्रकार के तापों से मन व्यथित हो फिर भी मन को परम शांति तथा परम सुख की अनुभूति होगी।

•

संप्रदाय का गौरव

श्री स्वामिनारायण भगवानने संप्रदाय का सर्वप्रथम मंदिर श्रीनगर अहमदाबाद में निर्माण कराकर अपने स्वसम श्री नरनारायणदेव महाप्रभु को बाहों में भरकर प्रतिष्ठित किया था। उसी समय से आजतक अहमदाबाद शहर की अनेकों प्रकार से प्रगति हुई है। इसी तरह संप्रदाय की दृष्टि से भी हम ऐसे बहुत सारे प्रसंगो के साक्षी है। जो भी सर्वावतारी श्री नरनारायणदेव महाप्रभु का आश्रय लिये हैं वे सभी आज आर्थिक, आध्यात्मिक, स्थिति में खूब विकास किये हैं। उसमें भी अपने ही सत्संग परिवार के श्री नरनारायणदेव तथा धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री के निष्ठावाले श्री सुरेन्द्रभाई पटेल (विशालावाले) का नाम सुनकर परिचय देने की जरुरत नहीं। कारण यह कि वे प.पू. आचार्य माराजश्री की आज्ञा प्रेरणा से द्विशताब्दी महोत्सव, रजत सुवर्ण जयंती महोत्सव, शतामृत महोत्सव, प.पू. बिन्दुराजा तथा वर्तमान प.पू. आचार्य महाराजश्री का विवाह प्रसंग, प.पू. आचार्य महाराजश्री की षष्टि पूर्ति महोत्सव इन सभी प्रसंगो में तथा दूसरे अन्य प्रसंगो में श्री सुरेन्द्रभाई का इन्टीरियर डिझाईन का योगदान तथा गंभीर ज्ञान का मार्गदर्शन आखों की किरकिरी बनजाये ऐसा है। उनकी विशाला को अपने देश का सुप्रसिद्ध समाचार पत्र धी टाईम्स ओफ इन्डिया द्वारा उस समय एवोर्ड से सम्मानित किया था। जिससे सत्संग समाज को विशेष गौरव-प्रतिष्ठा मिली थी। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा बड़े आचार्य महाराजश्री उपरोक्त समाचार जानकर उनके उत्तरोत्तर प्रगति के लिये अन्त:करण से आशीर्वाद प्रदान करते है।

नतून प्रकाशन

वैराग्य मूर्ति श्री निष्कुलानंद स्वामी विरचित स्नेहगीता के आधारपर "स्नेहगीता कथामृत" नामक पुस्तक की रचना शा. हरिकेशवदासजीने की है। जिसका प्रकाशन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से हुआ है।

गांधीनगर सेकटर-२३ मंदिरके महोत्सव प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से पुस्तक का विमोचन किया गया था। अपने इष्टदेव के प्रति प्रेमलक्षणा भक्ति की दृढता कराने में यह पुस्तक परम उपकारक होगी। अपने अहमदाबाद मंदिर के साहित्य केन्द्र से यह पुस्तक प्राप्त है।



भक्ति सुधा

घनश्याम बहुत चमत्कारी है ।

- तरलाबहन अतुलभाई पोथीवाला

अयोध्या में धर्मपिता के घर के पीछे शिवालय था । एक दिन घनश्याम वहाँ दर्शन करने गये । दर्शन के दौरान देवीबक्ष नामका कायस्थ शंकर भगवान से कुछ मांग रहा था । घनश्याम यह सुनकर उदास हो गये । उन्हे घर छोड कर तप करने का मन हुआ । उन्हे ऐसा हुआ कि जग में ऐसे कितने अज्ञानी जीव है सभी को आदेश दे कर उनका कल्याण करना है" इस विचार के साथ उदास मन वे घर आए ।

धर्मपिता ने उन्हे उदास देखा तो पूछा "आज उदास दिखाई दे रहे हो ?" घनश्याम तुरंत हंस कर बोले "नहीं मैं उदास नहीं हूँ ।" दूसरे दिन घनश्याम विद्याकुंड के मंदिर दर्शन करने गये । वहां व्रजविहारी नामक अंध ब्राह्मण पुजारी था । उसे रामायण तथा महाभारत संपूर्ण कंठस्थ था । वह मंदिर में बैठकर रामायण की कथा कर रहा था जिसे कुछ भक्त सुन रहे थे । तभी बात आयी "रामचंद्रजी ने १४ वर्ष का वनवास करने के लिए घर छोड कर चले गये ।"

रामचंद्र प्रभु के महान त्यागकी बात सुन कर घनश्याम को फिर से घर छोड कर वन में तप के लिए जाने का विचार आया । घनश्यामने कथा बंद करवा कर वैराग संबंधी प्रश्न ब्राह्मण को पूछे, उत्तर में उन्होंने कहा "कथा में प्रश्न पूछते हो तो विघ्न होता है प्रश्न घर आ कर पूछना मैं सभी पश्नो के उत्तर दूंगा ।" ब्राह्मण का उत्तर सुनकर घनश्याम नाराज होकर मंदिर के बाहर चले गये ओर बैठे । कथा में बैठे भक्त घनश्याम को जानते थे तथा उनके चमत्कार देखे थे इसलिए भगवान मानते थे ।

सभी भक्तोने उस ब्राह्मण को समझाया : आपने यह ठीक नही किया, आप घनश्याम के पास जाओ भले वे बाल स्वरूप दिखाई देते है किन्तु बहुत चमत्कारी हैं, अरे ! वे तो भगवान हैं उनका आशीर्वाद लो उन्हे नाराज मत करो ।"

ब्राह्मण को अपनी गलती समझमें आयी अपने शिष्यों के सहारे वे घनश्याम के पास आये । घनश्याम के चरण में गिरकर बोले "हे घनश्याम ! आप स्वयं भगवान हो मुझे माफ कर दो मुझ अंधे को आंख देदो, मैं भगवान का भजन पूजन करुंगा तथा कथा करुंगा । इस गरीब का उद्धार करो, मुझे आशीर्वाद देकर देखने लायक बनादो ।

घनश्याम को उस ब्राह्मण पर दया आयी, सर पर हाथ रख कर बोले "हे पुजारी ! देखो तो सही अब देख सकते हो ।" यह वचन जब उस ब्राह्मणने सुना तब उसके समक्ष साक्षात् भगवान दिखाई दिये राम कथा करते करते जो बाल रामचंद्र का स्वरूप मन में था वही दिखाई देने लगा । और सामने जैसे रामचंद्र खडे है ऐसी प्रतीति होने लगी । वह ब्राह्मण सब कुछ स्पष्ट देख सकता था तथा उपस्थित भक्तजनो को भी घनश्याम में रामचंद्र के दर्शन हुए ।

घनश्याम का यह चमत्कार देख सब चकित रह गये वह ब्राह्मण घनश्याम के आशीर्वाद लेकर अपने घर जाने को निकला ।

"घनश्याम बहुत चमत्कारिक हैं जन्म से अंधा वह व्रजविहारी आज दृष्टि प्राप्त की और घनश्याम में महाप्रभु को देख कर दिव्य दृष्टि भी प्राप्त की ।

हमारे सरोवर की महिमा

- पटेल रेखा बहन कीर्तिकुमार

श्रीहरि हमीर सरोवर में स्नान करने के लिए संतो के साथ नित्य आते थे पश्चात वे नारायण बाग जाते वहाँ इमली के पेड के नीचे की बेदी पर बैठते और संत हरिभक्तो की सभा होती थी ।

एकबार श्रीहरि महाराज आश्विन शुक्ल एकादशी को नारायण बाग की बेदी पर बिराजमान थे । संत हरिभक्तो की सभा बैठी थी उस समय सभा में बैठे सुंदरजीभाईने श्रीजी महाराज से पूछा गंगाजी की खूब महिमा है तब श्रीजी महाराजने कहा सतयुग में वामन भगवान के चरण स्पर्श होने के कारण है । आप तो सर्व अवतार के अवतारी अक्षरधाम के पति ऐसे आपने तो अपने संतो के साथ इस सरोवर में कई बार स्नान किया है तो इस सरोवर की महिमा कितनी होगी यह सुनने की हम सभी को इच्छा है तो बताने की कृपा कीजिये ।

सुंदरजीकी प्रार्थना सुनकर महाराज मेघ समान गंभीर वाणी में बोले, प्रकट पुरुषोत्तम नारायण ऐसे हम इस सरोवर की महिमा जानने में समर्थ नहीं है किन्तु उसकी थोडा सी झलक हम आपको दिखाते है । इस सरोवर के किनारे मरीचि, गौतम, वशिष्ट आदि अनेक ब्रह्मर्षि तपश्चर्या किये हैं । इन्द्रादिक देव भी इस सरोवर का नित्य दर्शन करने आते थे । मनुष्य, असुर मुनिके एक पिंड जितनी मृत्तिका के परमाणु जितने वर्ष तक इसी लोक में सुखो को प्राप्त करता रहे । यदि

कोई इस सरोवर का पानी पीये तो उसके हजारो जन्म के पापों का नाश होता है तथा ब्रह्म लोक प्राप्त करता है, पितरोंका श्राद्ध कर पींडदान करने से पितरलोग वैकुंठ धाम जाते हैं। गंगा आदि नदियो की तरह ही पुष्कर राज जैसे तीर्थ पर निवास करने वालों को इस सरोवर की मिट्टी के स्पर्श से ही यमपुरी की यातना से मुक्ति मिलती है। प्रदक्षिणा करने से हर पग पर यज्ञ का फल मिलता है।

श्रीजी महाराज के अमृत वचन सुनकर सुंदरजीभाई गंगाराम मल तथा सभा में उपस्थित हरिभक्त खूब खुश हुए। उस दिन के बाद कुछ हरिभक्तोने इस सरोवर में स्नान करना, प्रदक्षिणा करना, श्राद्ध तथा पिंडदान करना, मृत्तिका बाहर निकालना वगैरह नियम लिए। पश्चात श्रीहरि संत तथा हरिभक्तो के साथ सुंदरजीभाई के घर पदार्पण किये।

•

माया का त्याग

- रमीलाबहन के. मोदी (हिंमतनगर)

गढड़ा अंत्य. ३९ वें वचनामृत में महाराजने कहा क्या हैं ? कि भगवान की माया, देह वाले पदार्थ में ममत्व बुद्धि ही माया है। उस माया का त्याग करना और जिसने माया का त्याग किया वही माया को पार किया कहलायेगा। माया को त्याग कर भगवान में प्रीति करना ही सर्व शास्त्र का सिद्धांत है।

साधना के बगैर कोई सिद्धि नहीं प्राप्त होती। अपने यहाँ एक कहावत है "सिद्धि उसी के पास होती है, जो पुरुषार्थ करता है" माता अंजनी का सौभाग्य था कि उनके पुत्र हनुमान की तपश्चर्या तथा कर्तव्यनिष्ठा ने प्रभु राम को खींचा था, शकुंतलाने अपने पुत्र को ऐसा दूध पिलाया कि वह बचपन में ही शेर के दांत गीनते ऐसे थे शौर्य मूर्ति भरत। जो साधना करता है उसेही सिद्धि मिलती है। आलसी विद्यार्थी परीक्षक को कहता है।

"हजारो की किस्मत तेरे हाथ है।
अगर पास करदे तो क्या बात है॥"

उस विद्यार्थी का भला चाहने वाला परीक्षक उत्तर देता है कि,

"किताबो की किस्मत तेरे हाथ थी।
अगर पढ लेता किताब तो क्या बात थी।"

किसी भी प्रकार के व्रत के बिना जीवन का आकार नहीं मिरता। एक राजा को तीन कुंवर थे। राजा के पास खूब वैभव राज्य का बडा कारबार होने से राज्य की व्यवस्था रखने में लगे रहते। उन कुंवरो को संभालने के लिए दासी रखी थी। दासी का काम कुंवरो को संभालना था, वे जो चीज मांगते वह देती थी। मनपसंद चीज मिलते ही कुंवर खेलने लगते थे। जैसे ही कुंवर खेल ने लगते राजा अपने काम में लग जाते थे।

एक दिन तीन में से एक कुंवर पिताजी के नाम की आवाज लगायी और रोने लगा। दासी वहीं थी। इसलिए रोते हुए कुंवर को चुप कराने के लिए उसे चोकलेट, केटबरी, रसना सब कुछ दिया लेकिन कुंवर को भोजन की भूख कहाँ थी ? सारी चीजे उसने कमरे में इधर-उधर फेंक दी और जोरो से रोने लगे और रोना चालू ही रहा। दासी ने कई खिलौने दिये उसे भी कुंवरने फेंक दिये तथा चुप रहे नहीं। कुंवर के रोने का आवाज सुन सारे काम छोड राजा तुरंत चले आये कुंवर को उठाकर गोंद में लिये और कुंवर तुरंत शांत हो गये।

जगत के कर्ता धर्ता के लिए प्रत्येक जीव उस कुंवर के समान है। प्रभु कहते है। प्रत्येक कुंवर की मांग मै कैसे पूरी करुं? इसलिए मैने माया रुपी दासी रखी है। माया दासी सभी को भिन्न खिलौने से खेलाती है। किसी को स्वाद का चस्का है तो किसी को मोटर-बंगला का, कोई धन की लालच में कुत्ते की तरह दौड रहा है। जब जीवात्मा उस कुंवरकी तरह पंचविषयोको त्याग कर मुझे याद करती है तब मै दौड़ा चला आता हूँ। माया किसी को बांधती नहीं है। सभी जीव उसमें बंध जाते है।

कोई व्यक्ति खंभे को पकडकर कहे इस खंभे ने मुझे पकडा है तो वह गलत है। माया को दिल से छोड़ोगे तो खुदबखुद छूट जायेगी फिर भी माया को संत समागम से जिसका अंतःकरण शुद्ध हुआ है वही भक्ति से मुझे प्राप्त करता है। मनुष्य देह से ही मुमुक्षु भजन, भक्ति तथा भगवान को प्राप्त करता है। नाशवंत पदार्थो का मोह छोडकर माया का त्याग कर प्रभु की प्राप्ति के लिए श्रीहरि के चरणो में हंमेशा रहने को मिले ऐसे प्रयास करने से माया से दूर हो सकते है।

चराडवा मंदिर में नये महंत स्वामी की नियुक्ति

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने चराडवा श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत पद पर स.गु.शा.स्वामी हरिप्रकाशदासजी गुरु स.गु.शा.स्वा. नारायणप्रसाददासजी (मूली) की नियुक्ति किया है।

सापावाडा मंदिर में नये महंत स्वामी की नियुक्ति

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने सापावाडा (ईडरदेश) मंदिर के महंत पद पर स्वामी सत्यसंकल्पदासजी गुरु स.गु. स्वामी जगदीशप्रसाददासजी (ईडर महंत) की नियुक्ति किया है।

?????????????? प्रश्न पेटी ??????????????



साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी

(श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ खोलियाद में राजपूत खेंगार भक्त गढपुर श्रीजी महाराज के दर्शनार्थ आये उस समय महाराजने क्या कहा ? तथा खेंगार भक्तने क्या किया ?

प्रश्न : २ एक समय महाराज संतो की रसोई में खीर परस रहे थे उस समय ब्रह्मानंद स्वामी को महाराज खीर देने लगे तो ब्रह्मानंद स्वामीने मना कर दिया । उस समय महाराज खीर का पात्र स्वामी के ऊपर करके धार गिराने लगे उस समय स्वामी कौन सा कीर्तन बोले थे ?

प्रश्न : ३ गंगा के सात प्रवाह का नाम बताईये ?

प्रश्न : ४ तमे जेम सत्संग कर्यो अने समास थयो तेम बीजा ने आत्मामां समास थाय तेम तेना अंग अने अधिकारी सामु जोईने वात करवी । तेने जे रीते समझाय अने समास थाय तथा ज्ञान पचे तेम प्रभु ने अंतरमां धारीने वात करवी । अंते प्रगट मां निष्ठा थाय ते ज सर्वोपरि वात छे अने सर्वेनु मूल छे । यह वात किसने किससे कही ?

प्रश्न : ५ श्री नीलकंठ वर्णी ने वनविचरण के समय मैली विद्या के जानकार ऐसे किस ब्राह्मण के अभियान को उतारे थे ?

प्रश्न : ६ व्हालाजी वहेला आवो रे प्रीतम प्यारा, प्रीतम जी प्यारा तमने लागी छे मारी प्रीति, जाणों छो सर्वे रीति .... प्रीतम प्यारायः.....'' इस कीर्तन की रचना किसने की थी ?

प्रश्न : ७ भगवान रामचन्द्रजी सहित चारो भाईयों की पत्नियों का क्या नाम था ?

दिसम्बर २००७ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर तथा उत्तर देने वालों के नाम ।

(१) हरिकृष्णो धनश्यामो धार्मिकी भक्तिनन्दनः । वृहद्व्रतधरः शुद्धो राधाकृष्णो दैवतः । (२) स.गु. गोपालानन्द स्वामी । (३) प्रकरण-२, अध्याय-७, श्लोक १०८ । (४) माताजी यशोदा रे मेलो घेर माहेर रे, कहान जी रे महीडुं वलोवा काज । (५) दूध तथा जार का ठूमरा । (६) श्लोक-१०३ । (७) स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी ।

१. पटेल हेली किरीटभाई - नरोडा
२. पटेल सुभद्राबहन रमेशभाई - कनीपुर
३. कृपाली, जगदीशभाई, सचिन, हार्दिक
४. प्रफुल्लाबहन एस. पटेल - उवारसद
५. सां.यो. कोकिलाबा, उषाबा, शिल्पाबा, शीतलबा - सुरेन्द्रनगर
६. अमृतलाल कचरदास मोदी - सोजा
७. अंजनाबहन मनुभाई पटेल - नांदोल
८. कैलास बहन विष्णुभाई पटेल - नांदोल
९. शारदाबहन कांतिभाई पटेल, साकरबहन - नांदोल
१०. पटेल गंगाबहन भक्तिभाई, भक्तिभाई भोलाभाई - झुलासण
११. मेनाबहन डाह्यालाल पटेल - जासलपुर गाँव
१२. ज्योत्सनाबहन राजूलाल को. -आनंदपुरा
१३. गोरधनभाई शंकरदास पटेल - सोजा
१४. शिल्पाबहन मणीलाल पटेल - दहेगाँव
१५. माणेकबहन मणीलाल पटेल - दहेगाँव
१६. दक्षाबहन घनश्यामभाई सोनी - अहमदाबाद
१७. रेखाबहन कीर्तिकुमार पटेल - ऊँझा
१८. विनोदभाई पूंजाभाई पटेल - वहेलाल
१९. भारतीबहन गोरधनभाई वाघेला - जामसर
२०. माधवजीभाई हरखजीभाई - आद्रोजा
२१. भगवानजीभाई वेलजीभाई सोनी - मोरबी
२२. कंचनबहन बी. पटेल, शैलेष, निलेश - रतनपर

नोंट : १. प्रश्नपेटी का उत्तर प्रत्येक महीने की २२ तारीख तक आना अनिवार्य है । इसके बाद के आए हुए उत्तर का नाम लिखा नहीं जायेगा । जिसको सभी लोग जानलें ।

२. प्रश्न का उत्तर स्वच्छ अक्षर में होना आवश्यक है, जिससे सरलता से उसे पढा जा सके । पत्र के ऊपर एक ही व्यक्ति का नाम होना आवश्यक है, उसी का नाम अंक में छापा जायेगा ।

नोट : प्रश्नपेटी में भाग लेने वाले प्रत्येक भक्तजन को २००८ नये वर्ष का जयश्री स्वामिनारायण के साथ शुभकामना, धन्यवाद ।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिरमें धनुर्मास में धुनि महोत्सव

सर्वावतारी श्री नरनारायणदेव के अलौकिक सानिध्य में तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में १६ दिसम्बर से धनुर्मास प्रारम्भ हुआ। समस्त बहनों की गुरुलक्ष्मीस्वरूपा अ.सौ. प.पू. गादीवाला तथा अ.सौ. प.पू. बड़ी गादीवालाजी की शुभ उपस्थिति में बहनों को भी अद्वितीय दर्शन का लाभ धनुर्मास में मिलता रहा। प्रातः श्री नरनारायणदेव की मंगला आरती प.पू. बडे महाराजश्री प्रतिदिन उतारते रहे। इसके बाद विद्वान संतो द्वारा कथा का अलौकिक लाभ मिलता रहा। हजारो की संख्या में दूर-दूर से आबाल वृद्ध नरनारी श्री नरनारायणदेव की अप्रतिम निष्ठावाले भक्तजन श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुनि में अचूक हाजिर रहकर जीवन को कृतार्थ किये थे। इस बार सम्पूर्ण मास में धुनि के यजमानों की संख्या उत्तरोत्तर बढती ही गयी। देश तथा विदेश के इन्लेंड, अमेरिका, अफ्रिका, ओस्ट्रेलिया, न्युझीलेन्ड इत्यादि अनेक देशो में रहने वाले हरिभक्त फोन द्वारा महंत स्वामी को धुनि कराने हेतु लिखवाते रहे। दैनिक धुनि की संख्या कई की गुनी अधिक थी। सभा मंडप में धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री के सानिध्य में संत एवं भक्तजन उपस्थित होकर सर्वोपरि इष्टदेव के मंगलनाम की धुनि प्रातः काल में कालूपुर के समग्र विस्तार को दिव्य बना देती थी। अहमदाबाद कालूपूर मंदिर के कोठारी शा. रामानुजदासजी, विश्वप्रकाशदासजी, विष्णुप्रसाददास इत्यादि संत मंडल के मार्गदर्शन में कोठार स्टाफ के श्री भीखाभाई, श्री कल्पेशभाई तथा बापूनगर के हरिभक्त सभी मिलकर धनुर्मास में विविध सेवा करके। श्री नरनारायणदेव तथा प.पू. महाराजश्री की प्रसन्नता प्राप्त किये थे। हवेली में भी प.पूज्या गादीवालाजी की शुभ उपस्थिति में सांख्ययोगी बहने तथा गृहस्थ बहनें बडी संख्या में उपस्थित होकर धुनिका लाभ लेती थी। यथार्थ रूप से यह महीना भजन करने के लिये सबसे उत्तम है। जो इस मास को भजन सेवा से वंचित हों वे आगामी वर्ष की तैयारी करें उनके लिये श्रेयस्कर होगा। - *शा. धर्मकिशोरदास*

जेतलपुर धाम में धनुर्मास सम्पन्न

जहाँ श्रीजी महाराज प्रत्येक घर अनेक रूपों में पधारकर भक्तों के भाव को पूर्ण किये थे। तथा माँ की प्रतिष्ठा को प्राप्त की हुई गंगा मां की रसोई खाकर गंगा मां को प्रसन्न करते। ऐसे महा अलौकिक तीर्थधाम में विराजमान संकल्प कर्ता महा प्रतापी देव श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के अलौकिक सानिध्य में तथा धर्मवंशी प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तता पूज्य शा. महंत स्वामी आत्मप्रकासदासजी तथा पूज्य पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से एवं महंत के.पी. स्वामी के मार्गदर्शन से पवित्र धनुर्मास में श्री स्वामिनारायण महामंत्र १६ दिसम्बर से १४ जनवरी तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ था। धुनि तथा मास पर्यन्त कार्यक्रम के यजमान बनकर सभी धन्य हो गये। धुनि में संत तथा हरिभक्त बड़ी संख्या में उपस्थित होते थे। - *शा. भक्तिनंदनदास*

सिद्धपुर नूतन शिखरी श्री स्वामिनारायण मंदिरमें मूर्ति प्रतिष्ठा

इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री की आज्ञा से पवित्र तीर्थधाम सिद्धपुर में नूतन भव्यातिभव्य पांच शिखर का मंदिर तैयार हो गया है।

१४२ वर्ष पूर्व आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री सिद्धपुर में सुंदर मंदिर का निर्माण कार्य करके अपने हाथों से धर्मदेव भक्तिमाता हरिकृष्ण महाराज की मूर्ति वेद विधि से प्रतिष्ठत किये थे।

समय बीतते यह मंदिर सिद्धपुर नगर के खूब विकास होने के कारण तथा सत्संगी परिवार के बढने के कारण तथा धनी वस्ती होने के कारण जगह छोटी पड़ने लगी थी। जिसके परिणाम स्वरूप सत्संगियों की विन्ती सुनकर प.पू. बड़े आचार्य महाराजश्री स्वंय हाईवेरोड पर मंदिर की तरफ से जमीन की व्यवस्था करवा दी और प्रेमस्वरूप स्वामी को निर्माण कार्य करने की आज्ञा दे दी।

इसके बाद प.पू. बड़े महाराजश्री तथा वर्तमान पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से शा.स्वा. प्रेमस्वरूपदासजीने हरिभक्तों के सहकार से घ्रांगध्रा के सुंदर पत्थरों से पांच शिखर वाला मंदिर निर्माण कार्य पूर्ण किया। इसके बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री से मूर्ति प्रतिष्ठा का निवेदन किया। पूज्य महाराजश्री की आज्ञानुसार ता. २०-११-०७ से २६-११-०७ तक मूर्ति प्रतिष्ठा का आयोजन किया गया। इस प्रसंग के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण तथा त्रिदिनात्मक महाविष्णुयाग का आयोजन किया गया था।

पारायण के वक्ता पद पर शा.स्वा. प्रेमस्वरूपदासजी थे। इस प्रसंग पर अहमदाबाद से प.पू. बड़े आचार्य महाराजश्री संत हरिभक्तों के विशेष आग्रह पर पधारकर सत्संग को हार्दिक आशीर्वाद देकर महोत्सव की शोभा बढाये थे। प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरूपा गादीवालाजी भी बहनों को आशीर्वाद देने तथा दर्शन का लाभ देने पधारी थी। सभी महिला वर्ग चरणस्पर्श तथा दर्शन का लाभ लेकर कृत्य कृत्य हो गयीं।

ता. २६-११-०७ के शुभ दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा धूमधाम के साथ सम्पन्न हुई थी। जिसका दिव्य

दर्शन करके भक्तजन भाव विभोर हो गये थे । अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी नारायणस्वरूपदासजी, जेतलपुर से पू. पी.पी. स्वामी तथा अहमदाबाद, मूली, भुज, छपैया, माणसा, धोलका, प्रांतिज, उपलेटा, बिलिया, सिध्धपुर, महेसाणा इत्यादि मंदिर के महंत-संत पधारकर आशीर्वचन का लाभ दिया था । अंत में समस्त संत-हरिभक्तों को प.पू. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद देकर प्रतिदिन देवदर्शन की आज्ञा की थी ।

इस महोत्सव के मुख्य यजमान श्री नारायणभाई खुशालदास (मोखासण), कथा के मुख्य यजमान श्री वसंतभाई नारायणभाई देवचंददास सिध्धपुरा तथा पाटण, सुरत, मुंबई, सिध्दपुर, ऊँझा, व्रीलीया, रासजस्थान तथा देशविदेश के अनेको स्थान से उत्सव में भक्तोंने सेवा का लाभ लिया था । सभीने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की प्रसन्नता प्राप्त की थी । इस प्रसंग पर दिव्यस्वरूप स्वामीतथा संतमंडल सिध्धेश्वर स्वामी, शा. चन्द्रप्रकाशदास, श्रीरंगदास, घनश्याम स्वामी, चन्द्रप्रकाश स्वामी, ब्रह्मस्वरूप स्वामी आदि अनेक संत हरिभक्त खूब श्रद्धा भक्ति से सेवा करके श्रीजी महाराज तथा धर्मवंशीकी कृपा प्राप्त किये थे । - *साधु दिव्यस्वरूपदास गु. प्रेमस्वरूपदासजी*

इडर श्री स्वामिनारायण मंदिर

सर्वोपरि श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज के शुभ सानिध्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हार्दिक आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी जगदीशप्रदाससादजी की प्रेरणा से दीवाली प्रसंग पर ठाकुरजी को नाना विध व्यञ्जनों का अन्नकूट भोग लगाया गया था । जिसका दर्शन करके यहाँ के भक्तजन खूब आनन्दित हुए थे । - *महंत स्वा. सत्यसंकल्पदासजी, सापावाडा*

हिंमतनगर मंदिर का पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से हिंमतनगर मंदिर में विराजमान बाल स्वरूप घनश्याम महाराज १८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव बडे धामधूम के साथ मनाया गया । जिसके वक्ता शा.स्वा. हरिस्वरूपदास थे ।

ता. ६-१२-०७ के दिन पूज्य बड़े महाराजश्री के बरद हाथों से बाल स्वरूप घनश्याम महाराज का षोडशोपचार महाभिषेक सम्पन्न हुआ था । जिसके दर्शन का लाभ अनेको हरिभक्तों ने लिया । पाटोत्सव के यजमान अडपोदरा के अ.नि. वैद्यराज सोनी कांतिलाल अंबालाल पारेख तथा अनुकांताबहन परिवार थे ।

प्रासंगिक सभा में यजमान परिवार के श्री प्रफुल्लभाई, श्री भरतभाई, श्री अरविंदभाई, श्री अभिषेक, श्री हिमांशु आदि प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किये थे । स्थानिक हरिभक्तों ने तथा मेहमानों ने भी महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था ।

यहाँ के महंत स्वामी तथा श्री के.के. पटेल (स्कीम कमेटी सभ्य) इत्यादि संत, भक्त प्रासंगिक प्रवचन किये थे ।

अंत में प.पू. बड़े आचार्य महाराजश्रीने पाटोत्सव के यजमान तथा अन्य उपस्थितजनों को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । इस प्रसंग में पूजारी धर्मकिशोरदास तथा हरिप्रकाश स्वामी आदि मंडल की सेवा सराहनीय थी । श्री देवेन्द्रभाई बी. सोनी तथा हसमुखभाई सोनी के घर प.पू. महाराजश्री पदार्पण करके महालाभ दिये थे । - *श्री नरनारायणदेव युवक मंडल*

बद्रिनाथ श्री स्वामिनारायणं मंदिर

भरतखंड के अधिष्ठाता श्री नरनारायणदेव जहाँ सदा निवास करते हैं ऐसी तपोभूमि-तीर्थभूमि बद्रिनाथ श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकुरजी का २६ वाँ पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी गोलोक विहारी दास की प्रेरणा से श्री हितेन्द्रभाई रमणलाल पटेल (उमरेठवाला-नड़ियाद) के माता पिता अ.नि. रमणलाल मोतीलाल पटेल तथा विमलाबहन के स्मरणार्थे पाटोत्सव का आयोजन किया गया था ।

आश्विन शुक्ल-२ प्रातःकाल ठाकुरजी का अभिषेक पं. श्री काशीरामभाई (पालीवाला) द्वारा करवाया गया । बाद में अन्नकूट आरती हुई । इस प्रसंग का अनेकों भक्तों ने दर्शन करके जीवन को धन्य बनाया । संत पार्षद मंडल की सेवा सराहनीय थी । - *वासुदेव पटेल*

नारायणपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के नारायणपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े आचार्य महाराजश्री के

आशीर्वाद से तथा महंत शास्त्री स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री अमरशीभाई पटेल परिवार के यजमान पद पर मार्सति यज्ञ का आयोजन किया गयाथा । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से इस यज्ञ का आरम्भ किया गया । दीपावली के दिन ठाकुरजी को भव्य अन्नकूट का भोग अर्पण किया गया । धनुर्मास में श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन के प्रसंग पर प्रातः ५ बजे प.पू. बड़े आचार्य महाराजश्री प्रतिदिन पधारकर हरिभक्तों को दर्शन का लाभ देते है इस तरह नारायणपुरा मंदिर में उत्साह के साथ भक्तगण दर्शन करके धन्यता का अनुभव करते हैं ।

- *साधु सत्यस्वरूपदास*

मालपुर (स.गु. ब्रह्मचारी वासुदेवानंद स्वामी का जन्म स्थान)

श्रीहरि के समकालीन स.गु. ब्रह्मचारी वासुदेवानन्दजी के पूर्वाश्रम के इस जन्म स्थान श्री स्वामिनारायण मंदिर में ५ वाँ पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से कार्तिक कृष्ण-१३ ता. ७-१२-०७ के दिन धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ । इस मंदिर के स.गु. गवैया स्वामी केशवजीवनदासजी के शिष्य गोपी स्वामी, हरिजीवन स्वामी तथा बलदेव स्वामी की प्रेरणा से श्री हर्षदभाई एम. पटेल (एडवोकेट हिंमतनगर) का परिवार यजमान पद का लाभ लिया था । प्रासंगिक सभा में संतो ने सर्वोपरि श्रीजी महाराज तथा धर्मकुळ की महिमा बड़े सुंदर ढंग से समझाई थी । स्थानिक हरिभक्तोंने कथा एवं दर्शन का दिव्य

लाभ लिया था । - *प्रेमस्वरूप स्वामी*

बालासिनोर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से बालासिनोर श्री स्वामिनारायण मंदिर में तुलसी विवाह तथा त्रिदिनात्मक ज्ञान यज्ञ का आयोजन किया गया था । जिसके वक्ता शा. दिव्यस्वरूपदास थे । एकादशी के साथ विवाहोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसंग पर पा. रमेश भगत तथा हरिभक्तों की सेवा सराहनीय थी । - *कोठारीजी*

ऊँझा श्री स्वामिनारायण बहनों के मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से पंचवटी विस्तार में बहनो के सुंदर मंदिर का निर्माण कार्य हो जाने पर मूर्ति प्रतिष्ठा का आयोजन किया गया था । इसके उपलक्ष्य में ता. २८-१०-०७ से १-११-०७ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पन्चान्ह पारायण के वक्ता शा.स्वा. प्रेमस्वरूपदासजी थे । इस अवसर पर बहनों को आशीर्वाद एवं दर्शन का लाभ देने के लिए प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी १-११-०७ के दिन पधारी थी । उसी दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री भी पधारे थे उस समय संत हरिभक्तो ने धूमधाम के साथ उत्सव करके स्वागत किया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों से ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा वैदिक विधि से की गयी थी ।

प्रासंगिक सभा में कथा के मुख्य यजमान श्री सतीषभाई, श्री सुरेशभाई, श्री दिलीपभाई तथा विष्णुयाग के मुख्य यजमान श्री गोविंदभाई शंकरलाल नुगरा ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । अंत में संतो की प्रेरणा भरी वाणी के वाद प.पू. आचार्य महाराजश्री आशीर्वाद दिये थे । यहाँ के मंदिर में प.पू. गादीवालाजी की आज्ञा से अ.नि. सां.यो. गौरीबा-कंचनबा (धांगध्रा) की शिष्या बनिता बा तथा हंसाबा ठाकुरजी की प्रतिदिन सेवा के साथ कथा भी करती हैं । - *रामजीभाई पटेल*

नवा वाडज मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर नवावाडज में ता. १३-१२-०७ के दिन वचनामृत जयंती के अवसर पर भाई-बहनों ने वचनामृत का पठन किया था । अंत में नयना बहन हरेशभाई ने ठाकुरजी की आरती उतारकर दिव्य लाभ लिया था ।

- *शंभुभाई पटेल*

महुन्द्रा में द्वितीय पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से शा.स्वा. हरिजीवनदास के मार्ग दर्शन में यहाँ के मंदिर का द्वितीय पाटोत्सव कार्तिक कृष्ण-३ को श्री हितेन्द्रभाई रमणभाई पटेल (यु.एस.ए.) परिवार के यजमान पद पर संपन्न हुआ । इस प्रसंग पर अभिषेक महापूजा, अन्नकूट तथा सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । ईडर, सोकली, टोरडा, हिंमतनगर, अहमदाबाद इत्यादि स्थलों से संत पधारकर आशीर्वाद दिये थे । अंत में शाकोत्सव का प्रसाद लेकर संत-हरिभक्त खूब प्रसन्न हुए थे ।

- *मनुभाई माधाभाई पटेल*

मेघाणीनगर मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स्वामी हरिकृष्णदासजी एवं स्वामी देवप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री राजेन्द्रभाई परसोत्तमभाई के यजमान पद पर माताजी के संकल्प से पिताजी के स्मरणार्थ २६-११-०७ से २-१२-०७ तक श्रीमद् भागवत पारायण शा.स्वामी हरिस्वरूपदासजी (लाठीदण) के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ । इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारकर हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । बहनों के आमंत्रण पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी भी पधारी थी । ७० जितनी बहनें गुरुमंत्र ली थी। सभा संचालन शा.स्वा. हरिकृष्णदासजीने किया । इस प्रसंग पर बहुत सारे संत पधारे थे । सभी को अमृतवाणी का लाभ मिला ।

- *रणछोडभाई देवाणी*

छपैया धाम दर्शनार्थ गये हुए घाटकोपर-मुलुन्ड के हरिभक्तों को अद्‌भुत चमत्कार दर्शन

घाटकोपर-मुलुन्ड-मुम्बई-पूना के हरिभक्तों का संघ प्रयाग से छपैया दर्शन के लिये जा रहा था । वहाँ के रास्ते में जाते समय एकाएक बस बंद हो गयी । एक तरफ जंगल, सूनसान का स्थान, अंधकार चारो तरफ फैला हुआ, दूसरी तरफ बस में वृद्ध-बालक-महिला, उसी समय सभी लोग केवल भगवाननाम की धुनि किये जा रहे थे, उनके हृदय में छपैयाधीश के दर्शन की लालसा लगी हुई थी । उसी समय कहीं से दो व्यक्ति आये और देखते-देखते बस की क्षति को दूर करके चले गये उन्हें पुनः खोजा गया तो कहीं दिखाई नहीं दिये । सभी के मन में दृढ विश्वास हो गया कि हम सभी के विघ्न को दूर करने के लिये स्वयं बाल स्वरूप घनश्याम महाराज आये थे। सभी सुखपूर्वक छपैया पहुंचकर दर्शन करके धन्य हो गये । सभी को प.पू. बड़े महाराजश्री तथा अ.सौ. प.पू. बड़ी गादीवालाजी के दर्शन का लाभ मिला था । मोरबी के हरिभक्तों के पारायण प्रसंग पर महाराजश्री पधारे थे । इस तरह आज भी सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज छपैया धाम में रहकर यत्र-तत्र सभी जगहों पर भक्तों के रक्षार्थ चमत्कारिक दर्शन कराते रहते हैं । इस तरह यह छपैया धाम सर्वोपरि धाम हैं । जहाँ पर महाप्रभु सदा विराजमान रहते हैं । - *एम. बी. दरबार, मुम्बई*

भचाऊ (कच्छ) श्री स्वामिनारायण मंदिर में द्वितीय पाटोत्सव सम्पन्न

यहां के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से द्वितीय पाटोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ । इस प्रसंग पर भुज के शास्त्री घनश्यामनंदनदासने कथामृत पान कराकर हरिभक्तों को देव, आचार्यश्री की महिमा समझायी थी । भुज के महंत स्वामी पुराणी धर्मनंदनदासजी ठाकुरजी का अभिषेक करके आरती उतारे थे । भचाऊ के रहने वाली (बम्बई वर्तमान) अमृतबहन लखमशी खुथीया के पुत्र

मनसुखभाई, भगवानभाई तथा वाड़ी लाल खुथिया ने सबसे अधिक मंदिर के लिये बोली बोलकर अनुदान किया था। श्री खीमजीभाई पुनजीभाई शाह (मुम्बई) तथा बाबूभाई नानजीभाई खुथीया परिवारने उत्तम लाभ लिया था। कार्यक्रम का संचालन पुराणी स्वामी उत्तमचरणदासजीने किया था।

- कोठारीश्री

विष्णुयाग सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा एवं आशीर्वाद से तथा शा.स्वामी हरिकेशवदासजी की प्रेरणा से से.-२३ गांधीनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में २१-१२-०७ तक विष्णुयाग समारोहका आयोजन किया गया था।

इस अनोखा विष्णुयाग के सन्दर्भ में छ मास तक हरिभक्तोंने छ लाख ६१ हजार जप तथा तीन लाख चौरानवें हजार दंडवत, जनमंगल पाठ दो लाख उन्तीस हजार, नव हजार चारसौ इकहत्तर घन्टे तक धुनि, सत्संगिजीवन पारायण एकसो अठावन, वचनामृत पारायण एकसो बयासी तथा भक्त चिंतामणी पारायण दो सौ सत्तर जितनी की गयी थी।

समापन समारोह के आरंभ में संस्कार शिबिर में आध्यात्मिक तथा सामाजिक संस्कार की बात में पूजा, दंडवत, जप इत्यादि किस तरह करना चाहिए तथा मंदिर में किस तरह का वर्तन करना चाहिये इन सभी विषयों पर मार्गदर्शन दिया गया था। इसके अलांवा आहार-विहार, स्वच्छता, सेवा बालकको माता-पिता के प्रति आदर तथा उनके प्रति व्यवहार, पति-पत्नी के बीच सद्भाव इसके साथ सभी सत्संगियों में सद्भाव रखने पर उत्तम चर्चा की गयी थी। दूसरे दिन मासंति यज्ञ का आयोजन किया गया था। जिसमें १२५ जितने हरिभक्त भाग लिये थे। सायंकाल प्रसंग का मल्टी मीडीया द्वारा निदर्शन किया गया था।

तीसरे दिन इष्टदेव का केसरजल तथा तीर्थजल से अभिषेक किया गया, उस बीच में जनमंगल एवं पुरुष सूक्त का पाठ किया गया था। ५१ दीपक प्रज्वलित करके आरती की गयी थी। ५१ प्रकार के व्यन्जनों को प्रसाद के रुप में अर्पण किया गया। दोपहर में २-३० बजे सर्वरोग निदान कैम्प का आयोजन किया गया था। जिसमें डॉ. खिलनभाई, डॉ. शीतलबहन की सेवा सराहनीय थी। रोगियों को दवा विना मूल्य के दी गयी थी। २०० जितने भाई एवं बहनोंने चिकित्सा का लाभ लिया। रात्रि की सभा में बालकों तथा युवानों द्वारा विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया था।

चतुर्थदिन पूज्यपाद बड़े आचार्य महाराजश्री का आगमन हुआ। आपश्री के वरद हाथों से शास्त्रपूजन, आरती करके समापन किया गया था। इस प्रसंग पर कालूपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत स्वा. नारायणस्वरूपदासजी, निवृत्त महंत स्वामी शा. निर्गुणदासजी, जेतलपुर गुरुकुल के शा. स्वामी पी.पी. स्वामी तथा अन्य संतभी इस प्रासंगिक सभा में उपस्थित रहकर उद्‌बोधन किये थे। सभी संत शास्त्रीजी के दीक्षा की सुवर्ण जयंती तथा साहित्य सेवा का गुणगान किये। इस प्रसंग पर स्वामी की लिखी गयी "स्नेहगीता" पुस्तक का विमोचन प.पू. बडे आचार्य महाराजश्री के हाथों से किया गया था। प.पू. महाराजश्री अपने आशीर्वाद में बताया कि शास्त्री स्वामी की साहित्य सेवा अत्यंत सराहनीय है। इनके साथ बहुत पुराना परिचय है। इनके साथ प्रवास काल में हमें भी आनंद आता है। कारण यह की बड़े बुद्धिशाली हैं तथा हंसी माजक को भी समझ सकते हैं। इस प्रसंग पर हजारों भक्त उपस्थित होकर धन्यता का अनुभव किये थे। इस प्रसंग का संचालन हरिप्रसाददासजीने किया था।

अंतिम दिन प्रातः सर्व मंगल स्तोत्र से पूजन के बाद अभिवादन सभा हुई थी। बाद में सभी महाप्रसाद ग्रहण करके विदा हुए थे। सभी को इस याग का चिरस्मरण बना रहेगा। *-रजनीभाई पटेल तथा विनोदभाई सोनी*

असलाली में भागवत सप्ताह पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडे आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से असलाली में पू. महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से असलाली सत्संग महिला मंडल के मुख्य यजमान पद पर महेशभाई काशीभाई पटेल के सह यजमान पद पर श्रीमद् भागवत सप्ताह ता. १०-१२-०७ से १६-१२-०७ तक शा.स्वामी हरिओंप्रकाशदासजी के वक्ता पद पर संगीतबद्ध सम्पन्न हुआ। प्रथम दिन प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारकर बहनों को दर्शन-आशीर्वाद का अलौकिक लाभ दी थीं। पूर्णाहुति के दिन प.पू. बडे महाराजश्री पधारकर सभी भक्तों को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। पारायण के बीच में आनेवाले सभी प्रसंग धूमधाम के साथ मनाये गये थे। पाठशाला के संत तथा संगीत शिक्षक दीपकभाई ने संगीत का आस्वाद कराया। समग्र कार्यक्रम जेतलपुर मंदिर के महंत के.पी. स्वामी के मार्गदर्शन में हुआ। सभा संचालन शा. कुंजविहारीदासने किया।

प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से अपने जेतलपुर पाठशाला के छोटे विद्यार्थी संत तथा पार्षद छोटे-छोटे गाँवो में जाकर सत्संग सभा करके हरिभक्तों को प्रसन्न किये। जिस में नवागाँव, कलोल, महीज, असलाली, गामड़ी, मनीपुर, साणंद, नारायणनगर, नवावाड़ज, मेघाणीनगर, नवा नरोडा इत्यादि स्थानों पर जाकर सभा का लाभ दिया।

- शा. हरिओंप्रकाशदासजी

नवरंगपुरा (ता. विरमगाँव) मूर्ति प्रतिष्ठा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से विरमगाँव तहसील के नवरंगपुरा गाँव में सत्संगियों की संख्या बहुत कम हैं। जितने हैं वे श्री नरनारायणदेव तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री के निष्ठावाले हैं। पू. पी.पी. स्वामी इन गाँवों में विचरण करके सभी सत्संगियों को प्रसन्न किये थे। ऐसे इन गाँवो में अनेंको विघ्न होते हुए भी मंदिर

का पुनः निर्माण कराकर मूर्ति प्रतिष्ठा का आयोजन किया गया । इस उपक्रम में ता. १-१२-०७ से ३-१२-०७ तक शा. भक्तिनन्दनदास गुरु पी.पी. स्वामी के वक्तापद पर त्रिदिनात्मक भागवत दशम स्कन्ध की कथा संगीत के सुमधुर स्वर में सम्पन्न हुई । मूर्तियों की नगरयात्रा धूमधाम से निकाली गयी थी ।

ता. ३-१२-०७ के शुभ दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जब यहाँ पधारे उस समय इस गाँव के तथा नजदीक सभी गाँवो के हरिभक्त संतो की आगेवानी में धूमधाम उत्सव के साथ स्वागत किये थे । बाद में यज्ञ की पूर्णाहुति की गयी थी । प्रासंगिक सभा में यजमान परिवार ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आरती उतारी थी । अंत में गाँव के हरिभक्तों ने चरण स्पर्श का आलौकिक लाभ लिया था । इसके बाद यजमानोनें संत के पूजन का लाभ लिया था ।

प्रासंगिक सभा में पूज्य आत्मप्रकाश स्वामी पूज्य पी.पी. स्वामी, कांकरिया के महंत स्वामी तथा अन्य संत प्रासंगिक प्रवचन किये थे । अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने यजमान परिवारकों हार्दिक आशीर्वाद दिया था । इस प्रसंग पर अहमदाबाद से वी.पी. स्वामी, मथुरा के आनंद स्वामी, राम स्वामी, विश्वस्वरूपदास इत्यादि संत सेवा में लगे रहे । समग्र आयोजन पू. पी.पी. स्वामी द्वारा खूब अच्छी तरह से सम्पन्न हुआ । इस कार्यक्रम से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री खूब प्रसन्न हुए । अब इस गाँव की उत्तरोत्तर उन्नति होगी । श्री नरनारायणदेव महाप्रभु विशेष कृपा वरसावे ऐसी प्रार्थना ।

- महंत के.पी. स्वामी जेतलपुर

सीतापुर में मूर्ति प्रतिष्ठा

यहाँ के विरमगाँव तहसील के सीतापुर गाँव में अपना सुन्दर हरिमंदिर विद्यमान है । जहाँ पूज्य वंदनीय अ.नि. कृष्णकेशवदासजी स्वामी के शिष्य शा.स्वा. नरनारायणदासजी तथा पूज्य श्याम स्वामी एवं शा. उत्तम स्वामी आदि संतो के रंग से रंगाये हुए इस गाँव में श्री नरनारायणदेव गद्दी के वफादार तथा निष्ठावान हरिभक्त रहते हैं । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा श्री हनुमानजी महाराजकी मूर्तियों का कलरकाम करके पुनः प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में ता. १०-१२-०७ से ता. १२-१२-०७ तक यंज्ञ आदि प्रसंगो का आयोजन किया गया था । जिस यज्ञ का शुभारंभ वयोवृद्ध संत पू. श्याम स्वामी द्वारा किया गया था । साथ में पी.पी. स्वामी उपस्थित थे । जिस में गाँव के अनेक भक्तजनों ने लाभ लिया था । प्रतिदिन सायंकाल पू. पी.पी. स्वामी शा. आत्मप्रकाश स्वामी, शा. हरिवल्लभदास, शा. भगवतचरणदास इत्यादि संतोने कथा वार्ता द्वारा सत्संग को लाभ दिया था ।

ता. १२-१२-०७ के दिन प.पू. बड़े महाराजश्री जब गाँव में पधारे उस समय संत-भक्तों ने भव्य स्वागत किया था । बाद में प.पू. बडे महाराजश्रीने अपनेमंदिर में ठाकुरजी का अभिषेक करके आरती उतारे थे । इस के बाद श्री गणपतिजी हनुमानजी की मूर्तियों की पुनः प्राण प्रतिष्ठा करके यज्ञ की पूर्णाहुति करके प्रासंगिक सभा में पधारे थे । उसी सभा में प.पू. महाराजश्री का यजमान परिवार ने पूजन अर्चन करके आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किया था । स.गु. श्याम स्वामी को प्रसन्नता का पुष्पहार पहनाकर महाराजश्री ने आशीर्वाद दिया था ।

सभा में जेतलपुर, अहमदाबाद तथा कांकरिया के महंत स्वामी की प्रेरक वाणी का सभी ने लाभ लिया था । अंत में संत हरिभक्तो को प.पू. बडे महाराजश्री का दिव्य आशीर्वाद प्राप्त हुआ था । सभी हरिभक्त पू. महाराजश्री के चरणस्पर्श का लाभ लिये थे । *- शा. भक्तिनन्दनदास*

नारायणनगर में दशमस्कन्ध भागवत कथा

जेतलपुर महाप्रतापी देव श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्णा महाराज की छत्रछाया में नारायणनगर गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से अ.नि. चंचलबा परसोत्तमभाई पटेल की स्मृति में श्रीमद् भागवत दशम स्कन्ध प्रवचन कथा ता. १२, १३ दिसम्बर तक शा. भक्तिनन्दनदास गुरु पी.पी. स्वामी के वक्तापद पर संगीत के साथ सम्पन्न हुई । पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू. बडे महाराजश्री पधारे थे । प्रेमजीभाई घनश्यामभाई तथा दासकाका ने प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किया था । सभा में पू. शा. आत्मप्रकाशदासजी, पू. पी.पी. स्वामी, कांकरिया के महंत स्वामी आदि संतो के प्रेरक वाणी के बाद प.पू. बड़े महाराजश्री भक्तों को आशीर्वाद देकर अति प्रसन्न हुए थे । यहाँ सेवा में श्याम स्वामी, राम स्वामी, भगवतचरणदास थे ।

- के.पी. स्वामी महंतश्री जेतलपुर

विदेश सत्संग वृत्तान्त

कोलोनिया (I.S.S.O.) श्री स्वामिनारायण मंदिर में सम्पन्न उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के प्राकट्योत्सव के दिन विजया दशमी को कोलोनिया मंदिर में हरिभक्त बडी संख्या में उपस्थित थे । इस तरह दोनो उत्सवों का सुंदर मिलन हो गया था ।

मंदिर का संपूर्ण हॉल खचाखच भर गया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की प्रतिमा के चारोतरफ नाना बिध ढंग से सजाया गया था । भजन-कीर्तन-धुनि के बीच में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन किया गया था । महंत स्वामी सभा में धर्मकुल की महिमा को सरल भाषा में समझाया था । इस के साथ दशहरा का भी महात्म्य बताया था । यजमान परिवार का पुष्पहार से संमान किया गया था । अपने एक हरिभक्त श्री रमणभाई पटेल के स्वास्थ्य के लिए २ मिनट की धुनि की गयी थी । अंत में ठाकुरजीकी आरती एवं भोग

लगाया गया था । काली चौदश के दिन श्री हनुमानजी का पूजन अर्चन-आरती की गई थी । महंत स्वामीने कथा में हनुमानजी का माहात्म्य समझाया था । यजमान समूह मैं आरती पूजन का लाभ लिए थे ।

दीवाली का लक्ष्मीपूजन, शारदा पूजन भगवान के समक्ष वेदविधि से महंत स्वामी तथा रोहित पंड्या ने करवाया । पूजा में बहुत सारे हरिभक्त उपस्थित थे । यजमान परिवार का पुष्पहार से सम्मान किया गया था । नूतन वर्ष के प्रातः काल ६-०० बड़े ठाकुरजीकी मंगला आरती था ८-०० बजे श्रृंगार आरती की गयी थी । आज के मंगल दिन सम्पूर्ण होल हरिभक्तों से भर गया था । अन्नकूट के दर्शन के लिए इतनी संख्या में लोग उपस्थित थे । महंत स्वामी ने सभा में दीपावली तथा अन्कूट की महिमा समझाईथी तथा हरिभक्तों द्वारा कीर्तन धुनि की गयी थी । बहनों की सेवा प्रेणादायी थी । कार्तिक शुक्ल-१ के दिन तुलसी विवाह का सुंदर आयोजन किया गया था । इस प्रसंग पर मंदिर को खूब सजाया गया था । इस कार्य में युवान भाई-बहनों का योगदान सराहनीय था । सायंकाल ५-०० बजे भगवान का गाजे बाजे के साथ विवाह कार्य संपन्न हुआ था । पंडितोने मंत्रोच्चार किया । तुलसी विवाह के वर तथा कन्या पक्ष के यजमान सुंदर लाभ लिये थे । महंत स्वामी ने तुलसी विवाह का माहात्म्य समझाया था ।

सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आशीर्वाद पत्र वांचकर सभी को सुनाया गया था । ठाकुरजी की थाल-आरती करके सभी को प्रसाद दिया गया था । यजमान परिवार का पुष्पहार से संमान किया गया । इस तरह कोलोनिया मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चल रही है । *- प्रविणभाई शाह*

ह्युस्टन (I.S.S.O.)
श्री स्वामिनारायण मंदिर

अपने ह्युस्टन श्री स्वामिनारायण मदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प.पू. बडे महाराजश्री की आज्ञा से वर्ष दरम्यान आने वाले सभी उत्सव उत्साह पूर्वक मनाया जाता है ।

८ नवम्बर को काली चौदश के दिन श्री हनुमानजी का पूजन-अर्चन महंत के.पी. स्वामी द्वारा किया गया था । ९ नबम्बर के दिन नूतन वर्ष के मंगल प्रभात को दीपावली के दिन दीपकों से अलंकृत करके जगमगकर दिया गया था । सायंकाल समूह शारदापूजन सम्पन्न किया गया था ।

नूतन वर्ष के मंगल पर्व पर १० नवम्बर को ह्युस्टन के छोटे बडे सभी हरिभक्त प्रातः जागकर स्नान पूजा करके मंदिर दर्शनार्थ उमड पडे थे । कड़कती ठन्ढी में आबाल वृद्ध नरनारी को प्रातः ६-०० बजे मंगला आरती लाभ मिला था । सभा में प्रमुखश्री मनुभाई ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आशीर्वादपत्र वांचा था । जिसे सुनकर सभी गद्‌गद् हो गये थे । दोपहर में १२-०० बजे ठाकुरजी की अन्नकूट आरती के.पी. स्वामीने की थी ।

इस प्रसंग पर कमेटी के सभ्यों द्वारा १७ नवम्बर को "फंड रेजींग दीवाली डीनर" प्रोग्राम रखा गया था । जिस में प्रत्येक धर्म के भावुक भक्तजन भेंट अर्पण करके लाभ लिये थे । यह प्रोग्राम बडा ही सुंदर था । प्रत्येक भक्त भोजन का प्रसाद लेकर गये थे । २७ नवम्बर को तुलसी विवा का भी आयोन किया गया था । जिस में वर कन्या पक्ष के यमजानों ने अलौकिक लाभ लेकर विवाहप्रसंग को दिव्यता से मनाया था । महंत स्वामी द्वारा तुलसी विवाह का माहात्म्य समझाया गया । तुलसी विवाह के उत्सव में हजारों भक्त भाग लिये थे । सभी को मिठाई दी गयी थी । इस तरह इस दीपावली का अलौकिक उत्सव ह्युस्टन के हरिभक्तों ने मनाया था । के.पी. स्वामी ने प्रत्येक भक्तों का आभार व्यक्त किया । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चल रही है ।

- रमेश टी. पटेल

शिकागो (I.S.S.O.)
श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से यहाँ की सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चल रही है । इसी तरह यहाँ पर सभी प्रसंग के उत्सव भी उत्साह पूर्वक मनाये जाते है । प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ पर आये हुए जयप्रकाश स्वामी गु. हरिकृष्णदासजी तथा शा. स्वामी हरिप्रसाददासजी (जूनागढ) का स्वागत शनिवार की सभा में हरिभक्तों द्वारा किया गया था ।

२० अक्टूबर विजया दशमी के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ३५ वें जन्म दिन को हजारों हरिभक्तों की उपस्थिति में धूमधाम से मनाया गया था । भूदेव श्री दिनेशभाई ने प.पू. आचार्य महाराजश्री की प्रतिमा का मंत्रोच्चार के साथ पूजन-अर्चन करवाया था । ३५ वें प्राकट्योत्सव के दिन ३५ हरिभक्त यजमान बने ऐसा सभी ने संकल्प किया था । प.पू. आचार्य महाराजश्री के प्रति निष्ठा का भाव अद्‌भुत दिखाई दिया था । ३५ की जहग अनेंको हरिभक्त यजमान बनने का लाभ लिये थे । २५ अक्टूबर का शरदोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया था । सायंकाल श्री हनुमाजी की पूजा की गयी थी ।

ता. १०-११-०७ शनिवार के दिन नूतन वर्ष के प्रथम दिन बडी संख्या में मंगला आरती का दर्शन करने के लिए हरिभक्त उपस्थित थे । सभा मंडप खचाखच भरा हुआ था । सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री द्वारा प्रेषित पत्र नूतन वर्ष के उपलक्ष्य में वांचा गया था । दोपहर में हरिकृष्ण महाराज के अन्नकूट की आरती तीनों संत एवं यजमान परिवार ने उतारी थी ।

ता. २४-११-०७ शनिवार के दिन तुलसी विवाह का आयोजन श्री कमलेशभाई शाह के यजमान पद पर किया

गया था। इस प्रसंग में हजारों हरिभक्त दर्शन का लाभ लिये थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति सुंदर चल रही है। - *वसंतभाई त्रिवेदी*

सीडनी (ओस्ट्रेलीया I.S.S.O.) श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अहमदाबाद से .पी.पी. स्वामी (छोटे) तथा शा. रामकृष्णदास सत्संग प्रचार के लिए आये हुए थे। प्रतिदिन सायंकाल सभा में प्रवचन का लाभ देते थे। श्रीमद् सत्संगिजीवन की कथा ६ दिसम्बर तक हुई थी।

ता. १७ तथा १ नवम्बर को ब्लु माउन्टेन्सप में सत्संग शिबिर का आयोजन किया गया था। जिस में सैंकड़ो सत्संगी भाई-बहन उपस्थित थे। इस सत्संग गोष्ठी के कार्यक्रम में सभी ने प्रश्न पूछा जिसका उत्तर संतो ने दिया। समूह महापूजा में बहुत सारे हरिभक्त उपस्थित थे।

नूतन वर्ष के मंगलप्रभात पर मंदिर में ठाकुरजी की मंगला आरती तथा दोपहर को अन्नकूट लगाकर आरती उतारी गई थी। अन्नकूट का माहात्म्य स्वामीजीने सरलतापूर्वक समझाया था। अन्नकूट के यजमान श्री क्रिश्न सचीन पटेल तथा श्री पार्षद परेशभाई जुठाणी बने थे।

२५ नवम्बर को तुसली विवाह का आयोजन किया गया था। जिस में कन्या पक्ष के यजमानश्री राज तथा नयनाबहन तथा वर परक्ष के यजमान श्री भाविन तथा बोनी बहन बनीं थी हरिभक्त धामधूमपूर्वक मनाकर दर्शन किये थे। संतगण भी मेलबोर्न पधारे थे।

एटलान्टा मंदिर (I.S.S.O., U.S.A.) में प्रथम अन्नकूट महोत्सव मनाया गया।

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा .पू. बडे महाराजश्री के संकल्प प्रेरणा से हरिभक्तो के प्रयास से आलान्टा I.S.S.O. के अपने स्वामिनारायण मंदिर में दीपावली के अवसर पर ठाकुरजी के लिए प्रेमभाव से हरिभक्त भोजन बनाकर लाए इस आयोजन में दक्षेशभाई, श्री राजुभाई, श्री प्रविणभाई, श्री अशोकभाई, श्री रजनीभाई तथा बहनो में भावनबहन, राजेश्री बहन, रागेश्री बहन तथा मृदुलाबहन ने खूब सुंदरतापूर्वक सजावट की थी।

दि. १०-११-०७ को सुबह १०-०० बजे पूजारी भरतभाईने गोवर्धन पूजा की आरती उतारकर सभी को दर्शन का लाभ दिया था। सभा में हरिभक्तोने धून-कीर्तन किए थे ११-०० बजे सर्वातारी श्री स्वामिनारायण भगवान की आरती उतारी गयी थी। जिस में सुंदर मिठाई, केन्डी, खिलोने, फल तथा फूलसे बहनो ने सजाये थे। अन्नकूट की आरती का सभी ने समूह में लाभ लिया था। प्रासंगिक सभा में प.भ. रमणभाई पटेल (Ex. Chairman I.S.S.O.) ने यजमानो का स्वागत किया। तत्श्चात ज्ञानगोष्ठी की गयी थी। सभी प्रसाद प्राप्तकर घर की तरफ प्रयाण किये।

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

मुली : श्री स्वामिनारायण मंदिर के संत स.गु. स्वामी माधवजीवनदास (माधव स्वामी० गुरु स्वामी श्रीरंगदासजी दि. ४-१२-२००७ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

सरसपुर (अहमदाबाद) : प.भ. भगवतभाई अंबाराम पटेल की बहन गं.स्व. शांताबहन अंबारामदास पटेल (करजीसण)। श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए दि. ९-१२-२००७ को अक्षरनिवासिनि हुई है।

अहमदाबाद : प.भ. खजीभाई झवेरभाई पटेल दि. ६-१५-२००७ को श्रीजी महाराजका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

अहमदाबाद : गं.स्व. कमळाबहन गजानंदभाई जादव श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासिनी हुई है।

स्ट्रेधाम लंडन (यु.के.) : प.भ. परषोत्तमभाई नाथालाल पटेल (पलाणावाले) (उ. ७० वर्ष) श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए दि. १८-१२-२००७ को अक्षरनिवासी हुए है।

बावला : प.भ. जयंतीलाल रामजीभाई सोनी दि. २८-११-०७ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

अहमदाबाद-मणीनगर : प.भ. सुरजीतसिंह एम. पुरी की धर्मपत्नी अ.सौ. मीनाराणी श्रीहरि का अखंड भजन करती हुई दि. २१-११-०७ को प्रबोधनी एकादशी को अक्षरनिवासिनी हुई।

चेहीहील (न्युजर्सी) : प.भ. धनश्यामभाई नारणदास पटेल (न्युजर्सी के प.भ. माणेकलाल तथा कनुभाई के भाई तथा नविनभाई, प्रभुलभाई के पिताश्री, ता. ७-१२-०७ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हुए है।

आंतरसुवा : श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोका) सेवा पूजा करती सांख्ययोगिनी चंदनबा दि. २५-११-२००७ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती अक्षरनिवासिनी हुई है।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत स्वामी नारायणस्वरूपदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।



नारायणपुरा मंदिर में मासंति यज्ञ प्रसंग पर दर्शन देते हुए प.पू. महाराजश्री तता उद्‌बोधन करते हुए महंत स्वामी ।



नाथद्वारा मंदिर का पाटोत्सव अभिषेक करते हुए प.पू. बडे महाराजश्री ।



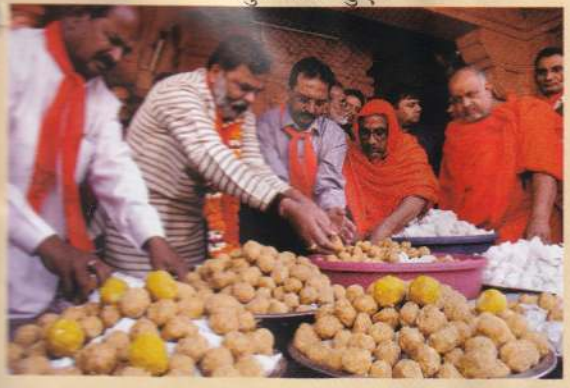
हिंमतनगर मंदिर में पाटोत्सव अभिषेक करते हुए प.पू. बडे महाराजश्री ।



अपने प.पू. बडे महाराजश्री विधान सभा के निर्वाचन में मतदान करके समाज में कर्तव्यपालन का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करते हुए ।



इडर के पास पोलो के जंगल में शरणेश्वर महादेव का दर्शन करते हुए प.पू. बडे महाराजश्री कां दिव्य भास्कर समाचार पत्र में प्रकाशित तस्वीर ।

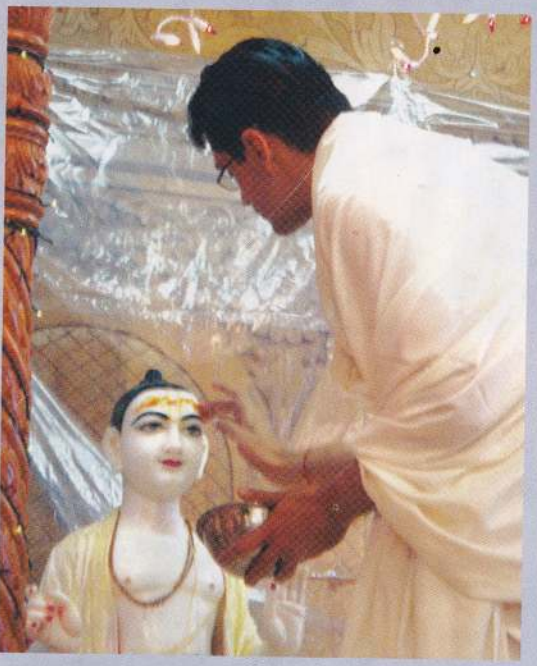


कांकरिया मंदिर में लड्डू के प्रसाद देते हुए महंत स्वामी तथा आनदं स्वामी ।



अपने टर्फ (इंग्लिश मीडीयम) स्कूल में विज्ञान प्रदर्शन को प.पू. बडे महाराजश्री के वरद् हाथों से प्रदर्शित कर देने के बाद डॉ. जेजे. रावल पू. लालजी महाराजजी को टेलिस्कोप के विषय में समझाते हुए ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month
under postal Regd. No. GUJ. 581 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-08



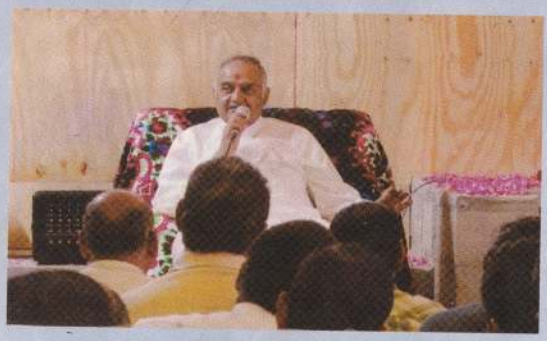
लोस एन्जल्स (I.S.S.O.) मंदिर में श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



टोरेन्टो केनेडा (I.S.S.O.) मंदिर में महापूजा विधि प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से सम्पन्न हुई ।



टोरेन्टो केनेडा (I.S.S.O.) मंदिर के लिए होल संपादित करके ठाकुरजीकी आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



ओकलेन्ड केनेडा मंदिर (I.S.S.O.) अपने मंदिर में हरिभक्तों को आशीर्वाद देते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री ।



आटलान्टा (I.S.S.O.) अपने मंदिर में भजन कीर्तन करते हुए हरिभक्त ।



प.पू. बड़े महाराजश्री के केमरा में संकलित की गयी भव्य मंदिर की तस्वीर ।



ओकलेन्ड-न्युझीलेन्ड अपने मंदिर की अचानक भेंट के लिए पधारे हुए प.पू. बड़े आचार्य महाराजश्री साथ में डॉ. कांतिभाई तथा अन्य हरिभक्त ।

Praful Kharsani